: चतुर्थ अध्याय :

यशपाल के उपन्यासों के क्रान्तिकारी पात्र

" सशस्त्र क्रान्तिकारी " तथा

" सामाजिक क्रान्तिकारी " पात्र

चतुर्थ अध्याय

यशपाल के उपन्यासोंके
क्रांन्तिकारी पात्र

प्रास्ताविक

उपन्यास में पात्र को महत्व :

उपन्यास की कथावस्तु की सृष्टि उपन्यासकार की कल्पना से उद्भुत पात्र ही करते हैं, इसीलिए उपन्यास में कथावस्तु के बाद पात्र और चरित्र चित्रण एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में आता है। ये पात्र परिस्थिती का निर्माण करनेवाले तथा परिस्थिति द्वारा प्रताड़ित दोनों प्रकारेके होते हैं। कल्पना और वास्तविकता के संयोग से लेखक पात्रों का निर्माण करता हैं। उपन्यास की परिभाषा करते समय यही बात प्रेमचन्दजी ने कही हैं, " मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूं। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्योंको खोलना उपन्यास कामूल तत्व हैं। " इस प्रकार मानव जीवन की व्याख्या करनेवाला लेखक अपने साधारण अथवा असाधारण अनुभवों के आधारपर पात्रों को यथार्थ रूप में ही औपन्यासिक भूमिपर अवतरित करता हैं।

उपन्यास की प्रारंभिक अवस्था में कथावस्तु की रंजकता की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था, परंतु आगे चलकर यह कथावस्तु मनुष्य जीवन से अलग रहने के कारण पाठकों को अधिक काल तक आकृष्ट नही कर सकी। उपन्यास से यह मांग की जाने लगी कि केवल रंजकता मैं ही वह उलझा न रहकर यथार्थ समस्याओं का वास्तविक अंकन भी करें। फल स्वरूप उपन्यासकार को इस मांग के अनुसार पात्रो की काल्पनिक सृष्टि करना छोड़, यथार्थ और वास्तविक पात्रों का निर्माण करना पड़ा। उपन्यास के पात्र सीमित सामर्थ्यवाले गुण दोष युक्त मनुष्य प्रतीत होने लगे, और उनका चित्रण सोद्देश्य तथा सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए होने लगा।

इन आधुनिक मांगों से प्रेरित हो यशपाल ने भी अपने उपन्यासों के

पात्रों की सृष्टि की हैं। समाज के विविध अंगोंका प्रतिनिधित्व करनेवाले उनके पात्र जाति, वर्ग, वेष भुषा, आकृति, वार्तालाप का ढंग आदि अनेक साधनों के व्दारा सजीव और सचेतन बन गये हैं। पात्रों की सफलता के बारे में कहा जाय तो जो पात्र पाठकों को अपने लगते हैं, जिनमें हर एक पाठक स्वयं का प्रतिबिम्ब देखता हैं, जिन पात्रों के व्दारा वह प्रभावित होता हैं। वे पात्र सफल कहलाते हैं। यशपाल के सभी उपन्यासों के पात्र इस प्रकार सफल ही बन पड़े हैं। झुठा सत्य का "तारा", देशद्रोही के खन्नाबाबु, मनुष्य के रूप की "सोमा", क्यों फँसे का "भास्कर" तथा मेरी तेरी उसकी बात के "अमर" सभी पात्र सफल बन पड़े हैं।

पात्रों का वर्गीकरण :

पात्रों का वर्गीकरण सामान्यतया तीन प्रकारों में किया जाता हैं।

१] कथानक में पात्र के महत्व की दृष्टि से।

२] चरित्र - विकास की दृष्टि से

३] पात्रों की चरित्रिक विशेषताओं की दृष्टि से।

१] कथानक में पात्रके महत्व की दृष्टि से पात्रो को दो वर्गों में रखा जाता हैं।

[क] मुख्य पात्र : कथा के सभी सूत्र तथा कथा संचालन मुख्य पात्रों के हाथ में होता हैं। कथानक के साथ इनका प्रत्यक्ष संबंध होता हैं। ये पात्र उपन्यासके नायक नायिका के रूप में होते हैं।

[ख] गौण पात्र : मुख्य पात्र का विकास कराने में सहायता करनेवाले ये पात्र होते हैं। उपन्यास की उपकथाओं में ये पात्र आते हैं। प्रासंगिक कथाओं में आकर कभी कभी मुख्य कथा के बिखरे तंतु जोड़ने का कार्य भी करते हैं।

२] चरित्र : विकास की दृष्टि से भी पात्रों के दोभेद किये हैं।

[क] स्थिर पात्र : स्थिर पात्र उपन्यास में आदि से अंत तक एक सम एक ही विचार तथा एक ही दृष्टि लेकर स्थिर रहते हैं। परिस्थितियों तथा घटनाओं के साथ वे कभी बदलते नहीं।

..—३.

[ख] परिवर्तनशील पात्र : परिवर्तनशील पात्र कथानक के विकास के साथ साथ परिवर्तित होते हैं ।

३] चरित्रिक विशेषताओं की दृष्टि से भी पात्रों के दो भेद किये जाते हैं

[क] व्यक्तित्व प्रधान पात्र

[ख] प्रतिनिधी या वर्गगत पात्र

प्रत्येक व्यक्ति के दो रूप होते हैं - एक सामान्य और दुसरा विशिष्ट जब किसी पात्र में सामान्य गुणों का आधिक्य रहता हैं तब उसे वर्गगत पात्र और जब उस में व्यक्तित्व प्रधान गुणोंका आधिक्य रहता हैं, तब उसे व्यक्तित्व प्रधान पात्र कहते हैं। इस दृष्टिसे यशपाल के विकसनशील पात्र वर्गगत होते हुअे भी व्यक्तिगत गुणो से युक्त हैं।

<u>यशपाल के पात्रोंका वर्गीकरण</u> :

यशपाल ने अपने अुपन्यासो मे चरित्र चित्रण पर विशेष बल नही दिया हैं। उनके पात्रो का चित्रण उपन्यास के विषय के अनुरूप गढा हैं। एक ओर पाश्चात्य सभ्यता के हिमायती यशपाल समाजवादी यथार्थ से प्रभावित हैं , तो दुसरी ओर क्रान्तिकारी देशभक्त यशपाल। यशपाल के इस दोहरे व्यक्तित्व का प्रभाव उनके पात्रों पर पडा हैं।

यशपाल के सभी पात्र मध्य वर्ग की श्रेणी के ही हैं। मध्यवर्ग के १] उच्च मध्य वर्ग २] निम्न मध्य वर्ग और [३] मध्य वर्ग इन तीन स्तरो के पात्रों का चित्रण करनेमें ही यशपाल अधिक रमे हैं।

[१] <u>उच्च मध्य वर्ग</u> :

धन और प्रतिष्ठा के मद में अन्य वर्गोंको तुच्छ और हिन माननेवाली प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करनेवाले ये पात्र हैं। इस वर्ग के अंतर्गत लाला ध्यानचंद, शैल [दादा कामरेड], चंदा राजाराम [देशद्रोही], नैयर, गिरिधारीलाल, कनक, अग्रवाल [झुठा-सच] मनोरमा जगदीश सहाय, सुतलीवाला [मनुष्य के रूप], अमर [मेरी तेरी और उसकी बात], अशोक

---४-

अमिता, महारानी [अमिता], दिव्या [दिव्या] आदि।

[२] निम्न मध्य वर्ग :

मध्य वर्ग का यह तीसरा वर्ग उन लोगों का हैं, जो धनके अभाव में व्यक्तिगत इच्छाओंको दमित करने के कारण विद्रोह और संघर्ष कर बैठते हैं। जैसे - भूषण, धनसिंह, सोमा [मनुष्य के रूप], शिवनाथ, यमुना [देशद्रोही], जयदेव, तारा, प्रमिला, सीता, परणदेई [झूठा सच]

[३] मध्य वर्ग :

मध्य वर्ग के ये पात्र दूसरी श्रेणी के होते हैं। यशपाल स्वयं इसी श्रेणी के होने के कारण इस वर्ग के पात्र यशपाल के विचारों के वाहक बन गये हैं। रॉबर्ट, दादा, हरीश, यशोदा, अमरनाथ [दादा कामरेड] खन्ना राज [देश द्रोही] मारिश [दिव्या], गीता [पार्टी कामरेड], उर्मिला सोमराज, प्राणनाथ, गिल [झूठा - सच], लारेन्स, पैन्टम, लिनी [बारह घण्टे], मोती [क्यों फँसे] उषा [मेरी तेरी और उसकी बात] आदि।

यशपाल न सिर्फ प्रतिभा संपन्न लेखक रहें हैं बल्कि एक भुक्तभोगी सशस्त्र क्रान्तिकारी भी रहे हैं। आपकी जवानी क्रान्ति के चने चबाने मे और शेष जिन्दगी साहित्य साधना में बीती थी। आपके उपन्यास के पात्रों में एक प्रकार का क्रमिक विकास दीख पड़ता हैं। आपके सशस्त्र क्रान्तिकारी और सामाजिक क्रान्तिकारी विचारों का प्रतिनिधित्व आपके उपन्यासों के प्राय: सभी महत्वपूर्ण पात्र करते हैं। आपके इन वैचारिक दृष्टिकोन को दृष्टि में रखकर आपके उपन्यासोंके पात्रों का विभाजन करके उनका चरित्र चित्रण करना प्रस्तुत लघु-प्रबंधका प्रमुख प्रतिपाद्य रहा हैं। यशपाल के समाजवादी क्रान्ति के विचारों के सभी पहलुओंपर इसी विभाजन के व्दारा ही प्रकाश डाला जा सकता हैं। यह वर्गीकरण इस प्रकार का होगा।

......५

उपन्यास का नाम	सशस्त्र क्रान्तिकारी पात्र	सामाजीक क्रान्तिकारी पात्र
१] दादा कामरेड	दादा	हरीश, शैल, रफीक, रॉबर्ट, अख्तर.
२] देशद्रोही	-	डॉ. खन्ना, शिवनाथ, राजदुलारी, ~~मनोरमा~~
३] दिव्या		मारिषा
४] पार्टी कामरेड		गीता, भावरिया
५] मनुष्य के रूप	सोमा, मनोरमा, भूषण, धनसिंह.	
६] झूठा - सच		जयदेव पुरी, डॉ.प्राणनाथ कनक, तारा, गिल, असद
७] अमिता		हिता और गोद
८] बारह घण्टे	बिन्नी	बिन्नी, लारेन्स, फ्रूटम
९] अप्सरा का श्राप		अप्सरा मेनका, शकुन्तला
१०] क्यों फँसे		भास्कर, दुनैया, मोती
११] मेरी तेरी और उसकी बात		अमर - उषा

प्रस्तुत विभाजन को देख यह बात स्पष्ट हो जाती हैं कि यशपाल ने अपने उपन्यास साहित्य में प्रथम उपन्यास दादा कामरेड के "दादा" को ही कुछ मात्रा में सशस्त्र क्रान्तिकारी के रूप में चित्रित किया हैं। उपन्यास के अंतमे दादा के बदले हुंए विचार यशपाल की सशस्त्र क्रान्ति के बारेमें बदलती आस्था के परिचायक हैं। अन्य सभी उपन्यासों में आपके पात्र सामाजिक क्रान्तिकारी विचारोंके प्रतीक के रूप में आये हैं। यशपाल के विचारों के वाहक बनकर आए ये पात्र अत्यंत सजीव और सफल बन पड़े हैं।

१: दादा कामरेड : [सन १९४२]

१: दादा :

"दादा" सशस्त्र क्रांति पर विश्वास रखनेवाले एक सच्चे "सैनिक सिपाही" हैं। स्वभाव से दृढ, मन से गंभीर और अंत:करण से कोमल दादा का व्यक्तित्व एक अत्यंत प्रभावी कमांडर के रूप में "हिंदप्रस" के कमांडर इन चीफ "चंद्रशेखर आजाद" के व्यक्तित्व का ही दूसरा रूप लगता है। इसी उपन्यास में यशपाल ने सोद्देश्य चंद्रशेखर आजाद को ही दादा के रूप में ढाला है।

"दादा- स्वयं लडनेवाले "सेनापति" हैं। वे अशिक्षित हैं। क्रान्तिका वही पुराना अर्थ, "सैक्रिफाईस" "मदत लैंड के लिए आत्म बलिदान" उनके मस्तिष्क में है। केन्द्रीय सभा के सामने दादा अपने ऊपर लगाई "डविय्यानुसीपन" की तोहमत को अत्यंत भाव विव्हल होकर स्पष्ट करते हैं। "स्टडी और नये टेक्नीक यह नयी नयी बातें न मैं जानता हूँ और न मुझे इन से मतलब हैं। इतने समय तक लडकर मैंने निभाया है, और आगे भी लडता रहूँगा। [१]

दादा ने पूरी जिन्दगी क्रान्तिकार्य में अकेले लडते हुए गुजारी। कमाण्डरी और नेतागिरी का उन्हें शौक नहीं है। कमाण्डर होनेपर भी उन्होंने सभी सलाह लेकर निर्णय लिए हैं। दादा का अपनी पिस्तौलपर और अपने बलपर पूरा विश्वास हैं। "पुलिस के हाथ पड बंदरिया का नाच कर फांसी के तख्तेपर झूलने" [२] के बजाय उनके साथ लडते लडते मरने में दादा को विशेष संतोष हैं।

स्वभाव से निग्रही, शरीर से सुदृढ और हस्टपुष्ट अनुशासन में कठोर और शस्त्रविद्यामें निपुण होने के कारण दादा केन्द्रीय समिति के आदरणीय कमांडर बनाए गयें। उनके व्यक्तित्व के रोब के नीचे पार्टी के सभी सदस्य मारे डर के झुकते हुऐ से नजर आते हैं। पार्टी के "अनुशासन"

---

[१] दादा कामरेड : यशपाल : पृष्ठ ५३

[२] --- वही --- --"-- पृष्ठ ५३

....७.

को तोड़नेवाले "हरीश" जैसे प्रिय साथी को भी सभी की अनुमति से "शूट" करने का फैसला लेते हैं। उनकी दृष्टि में पार्टी ही सर्वश्रेष्ठ हैं।

दादा स्वभाव से निस्स्वार्थी तथा त्यागी हैं। पार्टी के लिए उनके नेतृत्व में कई डकैतियाँ हुईं परंतु दादा ने कभी भी उस में अपना मन न दिखाया। जीवाराम - भोलाराम की डकैती के पैसे हरीश के मजदूर आंदोलन के लिए शैल को सौंपते हुये कहते हैं, "खैर, मुझे रुपयों से मतलब नहीं। जो देना था, वह चुका दिया। बाकी यह जिन लोगों का हैं, उन्हीं के पास जाय", समुन्दर का जल समुन्दर में।" [१]

दादा के स्वभाव में गर्व तथा हेंडी नाम के लिए भी नहीं हैं। अपनी गलती को सभी के सामने कुबुल करने में इन्हें किसी भी प्रकार की लज्जा नहीं आती। जब हरीश और शैल पर किये गये आरोप झूठे सिध्द होते हैं, तब वे अपनी कसूर की माफी इन शब्दों मे माँगते हैं, "मुझे अफसोस हैं उस रोज हरीश और तुम्हारी बाबत जो कुछ कहा गया था, उसका ख्याल न करना।" [२]

दादा स्वभाव से अत्यंत विनम्र और स्त्री जाति का सम्मान और खयाल करनेवाले हैं। उनका ह्रदय सागर की तरह विशाल हैं। वे वादे के पक्के होने के कारण जान जोखिम में डालकर वादों को निभाते रहते हैं। वे अपने लिए ख्याति एवं प्रदर्शन प्रियता को कभी नहीं चाहते। डाके से लाया रुपया जब शैल दादा को हरीश के हाथ सौंपने के लिए कहती हैं तब वे कहते हैं, "न, यह सब तमाशा मुझे नहीं चाहिए। ४ [३]

दादा के मन में मजदूरों के प्रति गहरी आस्था हैं। हरीश के मजदूर आंदोलन की वे सक्रीय सहायता करते हैं। मजदूर आंदोलन का विरोध करनेवालों का वे कड़ा विरोध करते हैं। इस हड़ताल को विरोध

---

१. दादा कामरेड : यशपाल : पृष्ठ १७३
२. ------- " -------- पृष्ठ १७२
३. ------- " -------- पृष्ठ १७४
४. ------- " -------- पृष्ठ १६८

करनेवाले बी•एम•को वे सुनाते हैं - "तुम्हारा मतलब हैं कि इन भूखे मरते हजारों मजदूरों के साथ धोखा करें। जो लोग अपने पेट की रोटी के लिए लड रहे हैं उनकी टाँग घसीट लें ? " [४]

दादा के स्वभाव में कुछ कमियाँ भी हैं। वे अशिक्षित होने के कारण चापलूसी करनेवाले बी• एम• जैसे चमचों का भरोसा कर लेते हैं और हरीश जैसे वफादार सैनिक को "शूट" करनेकी उतावली कर बैठते हैं। क्रान्तिका आधुनिक अर्थ सामाजिक क्रान्ति को माननेका शिक्षित मन दादा के पास नहीं हैं। लडना और मरना ही उनकी क्रान्ति का अर्थ हैं। समाज के साथ रहकर, श्रमजीवियों का संगठन बनाकर, सामूहिक क्रान्ति करना उनकी समझ के बाहर की बात हैं। हरीश की मजदूरोंकी सामूहिक हडताल रूपी क्रान्ति को वे सहायता करते हैं, परंतु इसके पीछे हरीश के प्रति प्रेम ही अधिक दीख पडता हैं, न कि सामूहिक क्रान्ति के प्रति।

इस प्रकार यशपाल ने "दादा" को "सशस्त्र क्रान्ति" के पुरानी विचारों पर दृढ परंतु हरीश जैसे "सामाजिक क्रान्ति" पर विश्वास करनेवालों की सहायता करनेवाला एक सिपाही के रूप में चित्रित किया हैं। अन्त में हरीश की गर्भवती पत्नी शैल का "मूक स्वीकार" करते हुये दादा अपनी पुरानी लीक कोछोडते हुये नजर आते हैं, परंतु यहापर भी उनके हरीशी प्रेम का ही प्रभाव दीख पडता हैं।

यशपाल ने दादा के रूप में सामाजिक नेतृत्व का आदर्श प्रस्तुत किया हैं। आज कल के भ्रष्ट नेतृत्व के युग में दादा का निष्कलंक चरित्र निश्चय ही एक "दीप-स्तंभ" की तरह पथ दर्शक, और उपकारक रहेगा।

२ : <u>हरीश</u> :

उपन्यास की सभी घटनाओंका केन्द्रीभूत पात्र "हरीश" होने के कारण वह उपन्यास का नायक हैं। भार माता को अंग्रेजों की गुलमी दास्य शृंखलाओं से मुक्त करने के लिए बनी आतंकवादी क्रान्तिकारी पार्टी का

•—९•

हरीश क्रियाशील सेनानी हैं। उपन्यास के प्रारंभ में ही वह हाथ में पिस्तौल लिए एक बमकेस के फरार कैदी के रूप में सामने आता हैं। हरीश उसका वास्तविक नाम नहीं हैं। वह जन्म से सिक्ख हैं। वह अपनी नव विवाहिता पत्नी का, इसी पवित्र देशकार्य के लिए त्याग भी करता हैं। वह अपने निजी सुखोपभोग की अपेक्षा सामाजिक जीवन के सुख दु:ख को अधिक प्राधान्य देता हैं। उसमें स्वार्थ रंच मात्र भी नही हैं।

हरीश निर्भीक और सत्यभाषी हैं। वह कृतघ्न नही हैं। उपन्यास के प्रारंभ में जिस यशोदा ने उसे अपने घरमें शरण दी थी उसके प्रति कृतज्ञता के भाव उसकी आँखों से टपकते रहते हैं। उसकी चोरी छिपे की मदद के बोझ से वह द्रवित होता और जाते समय कहता हैं , "मैं कुछ नहीं कह सकता, आपने जो दिया दिखाई हैं --------- आपका कल्याण हो।" [१]

हरीश स्वतंत्र विचारों का सुचक हैं। बी• एम• और दादा की भाँति वह अपनी शक्ति गुप्त संगठना और आतंकवादी प्रयत्नों में ही व्यय करना नही चाहता। वह सर्वहारा वर्ग को साथ लेकर सुध्द करना चाहता हैं। उसका कथन हैं, "अबतक हमारी अधिकांश शक्ति डकैनियाँ करने में और कुछ राजनीतिक हत्याओं में काम आयी हैं, परंतु हमारा उध्देश तो यह नहीं। हमारा उध्देश हैं, इस देश की जनता का शोषण समाप्त करके इसके लिए आत्म निर्णय का अधिकार प्राप्त करना।"[२] वह पिस्तौल को सामाजिक क्रान्ति कार्य के मार्ग का रोडा मानकर क्रान्ति कारियों की पहुंच जनतातक मानने का हिमायती हैं। वह कॉंग्रेस में घुसकर दूसरे जन आंदोलन करने के पक्ष का हैं।

हरीश में निडरता, कृतज्ञता, स-हृदयता और विचारोंकी

१• देशद्रोही : यशपाल : पृष्ठ १९

२• देशद्रोही : यशपाल : पृष्ठ ५२

स्वतंत्रता होनेपर भी उसके पैर इस धरतीपर ही हैं। मनुष्य की स्वाभाविक दुर्बलताएँ उसमे भी हैं। शैल के संपर्क में आनेपर उसकी पूर्व पीठिका जानकर भी वह उसके प्रति आकर्षित होता है। आंतक वादियों को स्त्री के आकर्षण से दूर रहना चाहिए इस सनातनी नियम का वह विरोध करता हैं। यशपाल ने मार्क्सवादी विचारों के अनुसार हरीश को मुक्त यौनवादी बनाया हैं। वह शैल का पूर्व चरित्र जानकर भी उसकी साह-सिकता का आदर करता हैं। शैल से उसका सहजात प्रेम हैं। शैल को नग्न देखने की उसकी चाह सैक्स की उसकी अतृप्ति की निशानी हैं। वह क्रान्तिकारी को पहले मनुष्य समझता हैं। क्रान्तिकारी को अपनी भावनाओं को उबाना नहीं चाहिए, यह उसका स्पष्ट मत हैं। वह सच्चा मार्क्सवादी हैं। यशपाल ने हरीश के चित्रण में उसकी जो स्त्रैणता दिखाई है वह आपत्ति-तजनक जरूर है लेकिन एक मानव के यथार्थ चरित्र के रूप में अअनुचित हर्गिज नही। इससे उल्टे हरीश के विशाल -हृदय की सीमाएँ और अधिक विकसित हो जाती हैं।

हरीश के क्रान्तिसंबंधी स्वतंत्र विचार और आंतकवादियों की रूढ़िप्रियता का संघर्ष हरीश को दादा और बी• एम• से अलग करा देता हैं। हरीश को शूट करनेका भी निर्णय केन्द्रीय सभा में होता हैं। हरीश निर्भीक हैं। वह अपनी मृत्यु से कभी नहीं डरता। अपनी जान के पीछे पड़े उसके साथियों के बारे में वह शैल से निर्भीकता से कहता हैं, " कहाँ हैं वे लोग ? मैं उनसे मिलूँगा। ------- तुम समझती हो, मैं जान बचाने के लिए भागता फिरता हूँ। ------- मैं उन लोगों से एक दफे फैसला करूँगा।" [१]

हरीश के निर्भीक और कठोर -हृदय में स-हृदयता का शीतल झरना भी बहता हैं। अपने मजदूर मित्र को वह हत्या करने से रोकता हैं, उसे अपना कर्तव्य समझाकर वह उसकी पत्नी के सुहाग की रक्षा करता हैं।

१• देशद्रोही : यशपाल : पृष्ठ ६७

••-१२•

हिंसात्मक कारवाई छोड शान्तिपूर्ण प्रयत्नों से मजदूरों की शक्ति की सहायता से वह ऊंचा उठाने के लिए वह मजदूरों की बस्ती स्वतंत्रता प्राप्ति का प्रयास करता हैं। मजदूरों के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए वह मजदूरों की बस्ती में रहकर अपना चेहरा तेजाब से विद्रूप करेक पुलिस और अपने साथियों की निगाहोंसे बचता हुआ सुल्तान बनकर कार्य करता रहता हैं। सुल्तान के रूप में उसका और एक अनोखा पहलु सामने आता हैं। वह हैं उसकी अथक परिश्रमशीलता। मजदूरों की हडताल में अंतिम समयतक वह स्वयं भुखाप्यासा रहकर मजदूरोंकी मदद करता रहता हैं। उसके इस परिश्रम को देखकर आंतकवादी दादा भी डकैती करके २०,००० रूपयोंकी मदद शैल के व्दारा उसे देते हैं।

उस समय के दादा के विचार हरीश के चरित्र पर यथा योग्य प्रकाश डालते हैं, "कितनी जल्दी समय बदल गया हैं। ऐसा जान पडता हैं, कि नदी को पार करने के लिए हमने नांव खेलनी शुरु की थी, परंतु नांव के नीचे से जल की धारा ही हट गयी हैं और हम आ टिके हैं सूखी रेती पर। जल की धारा दूसरी ओर घूम गयी हैं। ------- हरीश ठीक कहता हैं, बजाय जलकी धारा को घुमाकर नांव के नीचे लाने के नांव को ही उसी ओर घसीटना चाहिए ----- मेरा मतलब हैं, जनता की जलधारा में। " [१]

हर क्षण परिस्थिति का डटकर मुकाबला करनेवाला हरीश, यशपाल का ही दूसरा प्रतिरूप लगाता हैं, जो सदा वर्गसंघर्ष में हारे हुऐ सर्वहारा श्रमजीवी समाज को साथ लेकर मार्क्सप्रणीत क्रान्ति के लिए शासन व्यवस्था के साथ जूझता रहता हैं। एक सफल अभिनेता की भांति मिरासकर, के• आर• शुक्ला, सदरि और सुल्तान के रूपों में हरीश अपना कार्य करता रहता हैं। मजदूर संगठन के कार्य में लगे हरीश का समूचा जीवन बमकेस की फरार अवस्था से फांसी तक उनेकों घटनाओं से भरा हुआ हैं। दफा ३९६ में गिरफ्तार होकर भी वह अपना जीवन बचाने के लिए केवल सफाई ही पेश नही करता वरना निर्भिकता से अपने विचार एंव उध्देश्यों को भी निश्चित और दृढ शब्दोंमें अभिव्यक्त करता हैं। "अपने उध्देश्यों की पूर्ति

१• देशद्रोही : यशपाल : पृष्ठ १७३

...१२.

के लिए वह फाँसी के फंदे को भी निर्भीक और शान्त चित्त से अपने गले में डाल लेता हैं, और यह कहता हुआ अमर हो जाता हैं, "इन्कलाब जिन्दाबाद। दुनिया के मेहनत करनेवाले जिन्दाबाद। साम्राज्यवाद का नाश हो। संसार के शोषण का नाश हो। " [१]

हरीश को अधिक महान बनानेके प्रयत्न में यशपाल की एक गलती हुई हैं। हरीश ने सिर्फ मजदूरों की हडतालों और जुलूसों व्दारा आर्थिक लडाई को आगे रखकर लडाई लडने का प्रयास किया। जो व्यक्ति स्वयं बमकांड का फरार कैदी हैं, वह निहत्था होकर आतंकवादी गुप्त क्रांतिकारी पार्टी के अभाव में, खुले आम मजदूर संगठन और सामाजिक क्रांती कहांतक सफल रूप में कर सकता हैं। वह आसानीके फांसी के फंदे में फंस सकता हैं और कुछ ठोस कार्य करने की अपेक्षा आपने विचारों को ज्योति शैल के पेट में रखकर ही मर जाता हैं। यह जानते हुऐ भी कि सिर्फ खुले संगठन के व्दारा किसी पूंजीवादी शासन तंत्र से नहीं लडा जा सकता, हरीश स्वयं निहत्था बनकर बलिदान करता हैं। उसकी मृत्यु बलिदान नही लगती बल्कि राह भूलकर की हुई खुदकुशी ही लगती हैं। क्रान्तिके दो साधन होते हैं - एक क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी और दो जनसेवा। बिना इन साधनों के क्रान्ति एक ख्वाब बनकर रह जाती हैं। इन दो साधनों को छोड हरीश ने शान्ति को अपनाया। हरीश के चरित्र की यह सबसे बडी कमी हैं। युध्द और शस्त्रबल व्दारा राजसत्ता छीनना क्रान्ति का सर्वोच्च रूप हैं। यशपाल ने क्रान्ति के इस सूत्र के प्रति सन्हदयता नही दिखाई हैं।

डकैतियों का विरोध करनेवाला हरीश डकैती से प्राप्त रुपया स्विकारता हैं। यहांपर हरीश आपने सिध्दान्तों से डिग जाता हैं। और उसका परिणाम उसे भुगतना पडता हैं। उसे फांसीपर लटकाया जाता हैं।

इन कमियोंके बावजूद भी दादा कामरेड का हरीश यशपाल के क्रान्तिजीवन के प्रसंगो की प्रतिच्छाया में पला समाजवादी पात्र लगता हैं जो दादा जैसे अगुवा को भी प्रभावित किये बिना नहीं रहता।

---

१. देशद्रोही : यशपाल : १६५.

..१२२.

[३] शैल :

यशपाल के उपन्यास जगत् की प्रथम स्त्री पात्र शैल हैं। शैल "दादा कामरेड" की नायिका है। शैल का चित्रण लेखकने अत्यंत जागरूकता से और विशुध्द मार्क्सवादी दृष्टिकोन से किया हैं।

लाहौर निवासी लाला ध्यानचंदजी जैसे पूँजीपति की शैल इकलौती बेटी हैं। इकलौती होने के कारण उसे पूर्ण स्वतंत्रता देदी गयी हैं। वह एक अत्याधुनिक योरोपीय नारी जैसी दीख पड़ती हैं। वह एम. ए. की छात्रा हैं और पढाई के साथ साथ राजनैतिक कार्यों में भी हिस्सा लेती रहती हैं। वह कांग्रेस का कार्य करती हैं। खद्दर की साड़ी और स्लीवलेस ब्लाउज में वह बिल्कुल विदेशी कांग्रेस नारी दीख पड़ती हैं। उसका रूप वर्णन करते समय लेखक कहते हैं "उसके साफ, गंदमी कुछ लम्बे चेहरेपर कौमार्य की कोमलता और अनुभव हीनता मौजूद थी, परंतु उसके हावभाव और बोलने के ढंग में एक आत्मीयता सूचक आग्रह था। उसकी बड़ी बड़ी आँखों में आत्म विश्वास झलक रहा था। उसके रूप में तड़प पैदा कर देनेवाला सौंदर्य नहीं परंतु स्मृति में स्थिर हो जानेवाला आकर्षण था।" [१]

शैल स्वयं स्वतंत्र विचारोंवाली नारी हैं, और वह यशोदा को भी अपनी तरह बनानेकी कोशिश करती हैं। वह स्वभाव से एकदम खुली एवं ईमानदार होने के कारण उसका प्रभाव हरएक पर रहता हैं। दादा, बी.एम. हरीश, रॉबर्ट आदि उसके इसी प्रभाव के शिकार हो जाते हैं। वह समाज में नारी का स्वतंत्र अस्तित्व रखने के पक्ष की हैं। नारी पुरुष की विवाहिता स्त्री बनकर जीवनभर उसकी गुलामी करती रहे और उसकी इच्छा के अनुसार उसे शरीर सुख देनेवाला यंत्रमात्र बने, इसका विरोध करती हुई वह कहती हैं, " -------- यदि स्त्री को किसी न किसी की बनकर ही रहना हैं तो उसकी स्वतंत्रता का अर्थ ही क्या हुआ ? स्वतंत्रता शायद इसी बात की हैं, कि स्त्री एक बार अपना मालिक चुन ले परंतु गुलाम उसे जरूर बनना हैं। [२]

---

१. दादा कामरेड : यशपाल : २५ २.दादा कामरेड:यशपाल:३३

...२३.

शैलकी किशोरावस्थासे ही उसके जीवन में कई प्रेमी आ चुके हैं। महेन्द्र, खन्ना, डी• एम• और रॉबर्ट से लेकर हरीश तक आकर उसकी प्रेम यात्रा समाप्त हो जाती हैं। वह किसी भी प्रेमी के प्रेम को न पानेपर कभी दुखी नही हुओ। सभी दुखोंका बोझ ढोती हुओ यह नारी हरीश का गर्भ पेट में पालती हुई भी दादा को अपनाती हैं। रॉबर्ट से विवाह करने की चाह, हरीश के सामने निर्वसन होना, शैल के इन कार्यव्यापारोंमें वह दूसरोंकी इच्छा की उपेक्षा न करनेवाली और दूसरों के समाधान में अपना संतोष खोजनेवाली नारी दीख पडती हैं। ऐसी नारी को हम चंचल कह सकते हैं, लेकिन चरित्र हीन नहीं, क्योंकि इस बारे में उसका अपना मत इस प्रकार हैं। "क्या संसारभर की भलाई एक ही व्यक्ति में समा सकती हैं ? और जगह अच्छाई दिखाई देनेपर उसे कैसे अस्विकार किया जा सकता हैं ? क्या मनुष्य -हृदय का स्नेह केवल एक ही व्यक्तिपर समाप्त हो जाना जरूरी हैं। [१]

शैल परंपरागत रूढियोंको तोडनेवाली क्रान्तिकारी ,तीव्र नारी नारी हैं। नारी का कार्य केवल सन्तानोत्पत्ति और वंश रक्षा के अतिरिक्त और भी बहुतकुछ समाजोन्मुख प्रकारका होना चाहिए, ऐसा उसका मत हैं। वह समाज में नर नारी की समानता की हिमायती हैं। शैल मानों युगों युगो से पुरुष प्रधान संस्कृति की शृंखलाओं में जकडी भारतीय नारी को स्वतंत्रता का मंत्र देनेवाली देवी ही दीख पडती हैं। " क्या सब काम करनेका ठेका पुरुषोंने ही ले रखा हैं। " [२] इस स्पष्ट प्रश्न व्दारा वह नारी का जीवन चूल्हे चौकोंसे समाजाभिमुख मानकर उसे पुरुषों के साथ काम करने का उपदेश देती हैं।

संकुचित और सिमित प्रेम के प्रति शैल के मन में तीव्र घृणा हैं। हरीश जो नारी को साथी मानता हैं, उसकी इस समान भुमिका के कारण शैल रॉबर्ट को छोड हरीश की हो जाती हैं। उसके सच्चे कम्युनिस्ट

१• दादा कामरेड : यशपाल : पृष्ठ २४
२• दादा कामरेड : यशपाल : पृष्ठ ११९

होनेके कारण उसकी पवित्र स्मृति के रूप में उसका गर्भ पेट में रखकर संभालने में उसे गहरा संतोष है। उसे मौत से बचाने के सभी प्रयत्न वह करती रहती है।

शैल निर्भीक और स्पष्टवादी है। परिस्थिति का जायजा लेकर योग्य निर्णय लेने की तीव्र धारासार बुध्दि उसमें है। बी• एम• और दादा हरीश को शूट करने के हेतु जब शैल और हरीश के नाजायज संबंधों की पूछताछ करने शैल के घर आते हैं, तब शैल उन्हे बुरी तरह से फटकारती है। साथ ही हरीश पर मँडरानेवाला मौत का साया अत्यंत बुध्दिमानी से हटाती है। वह हरीश को बाहरही से यशोदा के घर पहुँचाकर उसे मृत्यु के मुँह से बचा लेती है।

शैल अत्यंत अभिमानिनी नारी है। मजदूर हडताल के लिए जब उसके पिताजी उसे पैसे नही देते तब वह अपना घर सदा के लिए छोडकर बाहर जाती है, और सच्चे कामरेड बनकर मजदूरोंकी सहायता करती रहती है।

शैल आधुनिक नारी का प्रतीक है। वह फैशनेबल कपडे पहनती है, सिगरेट पीती है, सभाओं में भाषण देती है तथा परंपरागत रुढियोंको तोडकर स्वतंत्र रहती है। यशपाल के शब्दो में कहा जाय तो, "शैल स्वयं कुछ न होकर घृणासे नाक भौं सिकोडनेवालों की अतृप्त परंतु जागरूक प्रवृत्ति है।" [१]

उपन्यास के अंत में शैल अंतर्बाह्य कामरेड बन जाती है। हरीश की फाँसी के बाद वह दुखसे पागल नहीं बनती। हरीश का अधुरा कार्य पुरा करनेके वास्ते उसका गर्भ पेटमे लेकर अत्यंत आत्म विश्वास के साथ दादा का हाथ थाम लेती है। जीवन से दूर भागने की अपेक्षा वह आशावादी बनकर भविष्यत के सुनहरे सपनों की ओर दादा को खींचती हुअी कहती है, "दादा, जोत कभी नहीं बुझती। हम चलेंगे, जोत को जारी रखेंगे। मुझे ले चलो।" २

शैल के स्वच्छंद चरित्र को लेकर उसपर चरित्रहीनता तथा अश्लीलता के आरोप लगाये गए हैं। कम्युनिष्ट समाज में नारी का स्थान देखे तो शैलपर लगाये आरोप भारतीय संस्कृति के हिमायती समीक्षकों द्वारा आत्यंतिक भावुकता में लगाये हैं, ऐसा लगता है।

१• दादा कामरेड : भुमिका : यशपाल : पृष्ठ ४

२• दादा कामरेड : यशपाल : : पृष्ठ १९९

एक बात हैं। यशपाल ने शैल को मर्यादा से अधिक रोमांटिक और स्वच्छंद बनाया हैं। उपन्यास में शैल का मार्क्सवादी कामरेड का रूप प्रचारात्मक ही अधिक दिखाया हैं। उपन्यास के अंत में ही शैल कुछ कार्य करती हुई से नजर आती हैं। पाठकों के मनमें कामरेड शैल की उपेक्षा प्रेमिका शैल ही अधिक प्रभावी रीति से गड जाती हैं।

पुरुष के साथ कार्य करने में न हिचकनेवाली और पुरुष प्रधान संस्कृति का विरोध करनेवाली मानिनी शैल एक ओर तो हरदम पुरुषोंको अपनी चाहत के अनुसार बदलनेवाली परंतु अंत में किसी न किसी पुरुष का सहारा चाहनेवाली शैल दूसरी ओर। इस प्रकार शैल भारतीय संस्कृति के संस्कारोंके प्रभाव में पलती कम्युनिस्ट नारी हैं। शैल का चरित्र पुस्तके पढकर कामरेड बननेवाली "भारतीय" नारी जैसा हैं। यशपाल जन्म से भारतीय होने के कारण ही शैल का चरित्र भी विशुध्द कम्युनिस्ट नारी के रूप में नहीं खींच पाये होंगे।

४ : रॉबर्ट -

रॉबर्ट पहले ईसाई धर्म का कट्टर प्रचारक था। उसकी शादी फ्लोरा नामक युवती से हुई थी। फ्लोरा हद से अधिक ईसा भक्त थी। रॉबर्ट लाहौर में ही एक कॉलेज में प्रोफेसर था। रॉबर्ट, फ्लोरा और उनकी बेटी नैनसी लाहौरमें ही अत्यंत सुखमय जीवन बिता रहे थे।

एक दिन रॉबर्ट के एक प्रोफेसर मित्र ने उसको बुखारीन की हिस्टोरिकल मेटेरियलज्म पुस्तके दे दी। उसे एक दो दफे पढने के बाद रॉबर्ट ने रिडल आफ दी युनिवर्स पढी। इन दो पुस्तकोंका रॉबर्ट के मन पर असर हुआ कि वह नास्तिक बन गया। मार्क्सवादी दर्शन रॉबर्ट के जीवन का दार्शनिक अंग ही बन गया। उसकी नास्तिकता देखकर उसकी पत्नी फ्लोरा उसे छोडकर चली गयी। लोक निन्दा के भय से रॉबर्ट ने नौकरी का भी इस्तीफा दे दिया और अपनी पुश्तैनी जायदाद

पर अपनी बेटी नैनसी के साथ सुख और ऐश की जिन्दगी जीने लगा।

रॉबर्ट के रूप में यशपालने मार्क्सवाद का दार्शनिक पक्ष हमारे सामने प्रस्फुटित किया हैं। रॉबर्ट और शैल प्रेमी हैं। हरीश की जान बचाने के लिए शैल अपने प्रेमी रॉबर्ट के बंगले में हरीश को ले आती हैं। वहाँसे हरीश उनके साथ मसूरी जाता हैं। रॉबर्ट के समाजवादी दर्शन का परिचय उसके कुछ दिनो के सहवास में हरीश को होता हैं।

रॉबर्ट अंतर्बाहिय समाजवादी हैं। मसूरी में शैल जब समाज की अव्यवस्था के बारे में रॉबर्ट के सामने अपने विचार प्रकट करती हैं, तब रॉबर्ट उसका उत्तर अपनी विशुध्द कम्युनिस्ट नीति के साथ देता हैं, "समाज और संसार का आरंभ होता हैं व्यक्ति से। जब व्यक्ति अपने जीवन मे रुकावट अनुभव करता हैं, तभी वह समाजिक संकटो के प्रति चिन्ता अनुभव करने लगता हैं, व्यक्तिगत और सामाजिक अधिकार की बात सोचने लगता हैं।" [१] रॉबर्ट का स्पष्ट मत हैं कि मनुष्य को मनुष्य मात्र के हित में मर जाना चाहिए न कि देश और समाज के हित में।

रॉबर्ट सोफास्टिकेटेड होकर भी मार्क्सवाद का प्रचारक हैं। पिताजी की पूँजीपर गुलछर्रे उडाना, नोकर चाकर रखना और पूँजीपति की आराम की जिन्दगी जीना रॉबर्ट जैसे मार्क्सवादी विचारोवाले व्यक्तिका जीवनादर्श हैं, यह भी एक विरोधाभास हैं।

विवाह के बारेमें रॉबर्ट के विचार प्रगतिशील हैं। स्त्री जब पुरुषोंकी बराबरी का अधिकार समाज मे चाहती हैं, तब विवाह और तलाक के कानून रखनेकी कोई आवश्यकता नहीं हैं, ऐसा रॉबर्ट का मत हैं। "समाज ने जब अव्यवस्था का डर लगता हैं, तब बंधन की आवश्यकता होती हैं। विवाह एक बंधन हैं। हैरान हूँ कि समाज में इस बंधन का इनता आदर क्यो हैं ? दूसरे बंधनोंकी तरह इसे भी आजादी का शत्रु समझना चाहिए। तमाशा यह है कि लोग इस बंधन मे बंधने के लिए

---

१. दादा कामरेड : यशपाल : पृष्ठ १००

बेताब रेहते हैं। [१]

रॉबर्ट समाजवाद के दो अर्थ लगाता हैं, "समाजवादी विचार दो तरहके हैं। समाजवाद का एक रूप हो सकता है कि बड़े आदमी गरीबोंपर दया कर अपनी स्थिति कायम रखते हुवे उसकी अवस्था सुधारनेकी बात सोचे। दूसरा यह कि गरीब आदमी शासन और अधिकार स्वयं अपने हाथमें ले लें। पहला हुआ स-तोंका या गांधीवादी - समाजवाद और दूसरा हैं मार्क्सवादी समाजवाद। " [२] रॉबर्ट दूसरे प्रकारे के समावाद का सक्रिय अनुयायी हैं।

रॉबर्ट विशाल -हृदयी हैं। फ्लोरा उसे छोड़कर जाती हैं परंतु रॉबर्ट दसकी संपी-त पर फ्लोरा का अधिकार स्वीकृत करके उसका परितार्थ चलानेका विचार करता रहता हैं।

परिवार नियोजन के बारे में भी रॉबर्ट के विचार शैल की अपेक्षा अधिक आधुनिक हैं। समाज में परिवार नियोजन की आवश्यकता प्रतिपादित करते समय वह कहता हैं, " मैं समझता हूँ, मौजूदा समाज में बर्थ कंट्रोल के बिना निर्वाह नहीं। " [३] बर्थ कंट्रोल के लिए वह गर्भपात को उचित मानता हैं। उसका मत यह हैं कि पुरुषों के बराबर यदि स्त्री को अधिकार देने हो तो उसे संभोग का भी समान अवसर देना चाहिए। यदि स्त्री हर वर्ष गर्भवती हो जाए तो उसके लिए संभोग के अवसर कितने मिलेंगे ? यही स्त्री की पराधीनता हैं। पुरुष तो हाथ झाड़कर चला जाता हैं, परंतु मुसीबत सहनी पड़ती हैं स्त्री को।

रॉबर्ट स्वभाव से हँसोड़ और निरहंकारी हैं। शैल को वह अपना साथी और मित्र मानता हैं। शैल को सिगरेट पीने का प्रेमाग्रह वह करता हैं, और उसके समान अधिकारोंकी रक्षा करता है। जब उसे यह मालुम होता हैं कि शैल उसे छोड़ हरीश की ओर आकृष्ट हो रही हैं तब भी वह उसके साथ दोस्ती का नाता निभाता रहता हैं। उसका धिक्कार नहीं करता।

---

१. दादा कामरेड : यशपाल : पृष्ठ : १०५
२. दादा कामरेड : यशपाल : पृष्ठ : १०६
३. दादा कामरेड : यशपाल : पृष्ठ : १३७

शैल और सुलतान [हरीश] की सहायता करना वह अपना धर्म समझता है।

रॉबर्ट का धर्म है, मानवता और ईश्वर है मानव। जब हरीश और अख्तर हड़ताल की नोटिस देते हैं तब रॉबर्ट स्ट्राईक कमेटी में रहकर हड़तालियोंकी सक्रिय सहायता करता रहता है। दो महिनों तक हड़ताल चलती है। रॉबर्ट अपना काम छोड़कर हड़ताल में कार्य करता है। अंतमें इस लम्बे हड़तालमें मजदूरोंकी गिरी हुई हालत को देख वह निराश हो जाता है और हड़तालियोंको आखरी सलाम करता है। यहींपर रॉबर्ट के चरित्र में दिखावटी मार्क्सवाद होने की आशंका आती है।

रॉबर्ट का समाजवादी प्रेम यहांपर कागजी घोड़ोंकी तरह बनावटी दीख पड़ता है। किसी का [शैलका] दिल रखनेके लिए वह थोड़ा बहुत कार्य करता रहता है। वह अपने ऐशोआराम की जिन्दगी छोड़कर प्रत्यक्ष रूप में समाज की सेवा नही करना चाहता। यशपाल ने रॉबर्ट को अपने सैध्दान्तिक विचारोंका प्रचार करनेवाले कम्युनिस्ट के रूप में चित्रित किया है। इस प्रकार रॉबर्ट सिर्फ विचारों से कम्युनिस्ट है, कृति से नहीं। उसकी इसी वृत्ति के कारण ही शैल उसका साथ छोड़ हरीश की ओर झुकती है।

५: रफीक -

"रफीक" एक कामगार नेता है। हरीश का कामगार मित्र अख्तर की पत्नी जमीला उसका वर्णन करती है। " मुट्ठीभर का बैंत जैसा आदमी, क्तर क्तर कैंची सी जबान चलाता है। चार चार, पाँच पाँच लोग इकट्ठे हो जाते हैं और हड़ताल की बातें करते हैं और खूब बीड़ियाँ फूंकते हैं। कहता है एका करो एका और हड़ताल की बातें सुनाता है।" [१]

---

१. दादा कामरेड : यशपाल : पृष्ठ ७१

...४०.

रफीक पैदाइशी कामगार नेता हैं। उसमें नेतृत्व के सभी गुण हैं। अपनी पैनी जुबान से वह कामगारोंको हडताल के लिए तैयार करता हैं। हरीश के साथ जब उसकी मुलाकात होती हैं तब वह अपने आदमियों के साथ हडताल की बैठक में रॉबर्ट के घर आता हैं। और हडताल की योजना बनाने में सहायता करता हैं।

रफीक कांग्रेस का पक्का विरोधी हैं। वह हडताल के मजदूर कांग्रेस नेता के हाथोंमें देना कभी मंजुर नहीं करता। वह रॉबर्ट का विरोध करता हुआ कहता हैं, " तुम बडे दजीब आदमी हो, तुम मजदूरों का संगठन पूंजिपतियोंके आश्रयमें जाकर करना चाहते हो। " [१] उसका यह मत हैं कि मजदूर जब संगठित हो जाते हैं तब राजनैतिक शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। अपनी हडताल योजना के बारे में उसके विचार इस प्रकार हैं, "पहले मजदूरों, सब पेशेके मजदूरों को आर्थिक प्रश्नोंपर संगठित करना, फिर उनके संयुक्त मोर्चे के बल से राजनैतिक शक्ति के लिए यत्न करना, हमारी यह लाईन हैं। [२]

रफीक, हरीश, का सम्मान करता हैं। उसे कपडा मिल के मजदूरोंका सेक्रेटरी बना देता हैं, और स्वयं फंड जुटाने की जिम्मेदारी लेता हैं।

दो महिनोतक हडताल से ग्रस्त मजदूरों को आटा, धान्य देने के लिए वह दिन रात घूमता रहता हैं। मजदूरोंका आत्मबल बढाता हैं। इस प्रकार रफीक अत्यंत सक्षम, क्रियाशील और पक्का मजदूर नेता हैं।

६ : अख्तर -

हरीश का बचपन साथी और एक कामगार के रूप में अख्तर का चित्रण किया हैं। अख्तर असली कामगार हैं। स्वभावसे इतना क्रोधी हैं कि अपने मालिक तथा अन्य समाज कंटकोंको जान से मारनेकी सदा तैयार

---

१. दादा कामरेड : यशपाल : पृष्ठ : १४८
२. दादा कामरेड : यशपाल : पृष्ठ = १४८

रहता हैं। मजदूर का दु:ख दारिद्र्य और दैन्य का वह भुक्तभोगी हैं। अख्तर हरीश का अत्यंत आदर करता हैं।

हडताल में वह हरीश का साथी बन जाता हैं। हरीश के प्रभाव में आनेके कारण ही वह भी फाँसी का फंदा चूमता हुआ आनंद के साथ अमर हो जाता हैं।

३ : देशद्रोही [सन १९४३]

१] डॉक्टर भगवानदास खन्ना -

"देशद्रोही" उपन्यास की आद्यन्त परिस्थितियों और सभी घटनाओं के साथ संबंधित होने तथा लेखक के उध्देश्य को पूरा करने-वाला केन्द्रीभूत पात्र होने के कारण डॉ• खन्ना उपन्यास के नायक के रूप में दृष्टिगोचर होता हैं।

विद्यार्थी दशा से ही डॉ• खन्ना पूँजीवादी व्यवस्था को हटानेका इच्छुक ऐसा मार्क्सवादी विचारधारा का पात्र रहा हैं। वह विद्यार्थी अवस्था में अपने मित्र शिवनाथ की सहायता से बम निर्माण करता हैं। बचपन में सशस्त्र क्रान्ति पर विश्वास रखनेवाला यह पात्र आगे चलकर सामाजिक क्रान्ति की ओर झुक जाता हैं। अपनी विशेष क्षमता एंव रुचि के कारण वह लाहौर मेडिकल कॉलेज से डॉक्टरी प्राप्त होता हैं और देश सेवा के उध्देश्य से फौजी डॉक्टर बन जाता हैं।

डॉ• खन्ना सदैव अपने उध्देश्यों के प्रति आस्थावान नजर आता हैं। वजीरी उसे पकडकर अनंत यातनाएँ देते हैं। उसकी बिक्री करते हैं, उसे मुसलमान बनाते हैं, "गुरन" जैसी हब्शी बालिका उसे "नामर्द बोद्दा" तक कहती हैं। इन सभी प्रसंगों में अपने संस्कारों को न छोडनेवाला और अपने लक्ष्य के प्रति सदैव सतर्क रहनेवाला डॉ•खन्ना निश्चयकी आदर्श पात्र लगता हैं। गजनी में "नर्गिस" जैसी सुंदरी के कोमल बाहुपाश भी उसे बध्द नही कर पातें। अपने देश जानेकी राह

...२२·

ढूँढनेकी फिर ही वह उसके साथ शादी करता है।

डॉ· खन्ना आदर्श प्रेमी हैं। अपनी पत्नी राज की याद में वह तडपता रहता है। कई माशुकाएँ उसे पानेकी इच्छा रखती हैं लेकिन वह अपनी भावना और कड़ा नियंत्रण रखे स्वदेश में रह अपनी पत्नी राज को पाने के सपने ही देखा करता है। इसी आदर्शवादिता की अति के कारण कहीं कहीं डॉ· खन्ना प्रणय व्यापार में सचमुच ही डरपोक दीख पड़ता है। "नुरन" जब डॉक्टर खन्ना को बाहोंमें कसकर उसके गालपर दाँत मारती है तब डॉक्टर की हालत इस प्रकार की हो जाती है, "डॉक्टर का चेहरा पुराने कागज की तरह पीला पड गया और शरीर पसीना पसीना हो गया।" [१]

अंसार के रूप में मुसलमान बनकर जब डॉक्टर खन्ना का अफगानिस्थान में अब्दुल्ला की बेटी "नर्गिस" के साथ निकाह हो जाता है, तब भी डॉक्टर उसे पूर्ण रूप से संतोष नहीं दे पाता। अपनी वास्तविक स्थितीसे नर्गिस को परिचित कराने में उसे यहाँपर कोई डर नहीं था। परंतु यहाँपर डॉ· खन्ना नर्गिस को अंधेरे में रखकर उसके असीम से प्रेमका अपमान करता है। नर्गिस का प्रेम अपने देश जाने का साधन मात्र समझता है। राज पर मरनेवाले डॉक्टर का नर्गिस के प्रति ऐसा बरताव रखना अच्छा नहीं लगता।

समरकंद जाने के बाद डॉ· खन्ना कामरेड गुलशा नामक एक नवयौवना के संपर्क में आया। परिचय घनिष्ठ हुआ। उसके प्रणय निवेदन को भी डॉ· खन्ना ने ठुकराया।

इस प्रकार प्रणय के क्षेत्र में उसके सामने प्रणय की झोली फैलानेवाली सभी उपनायिकाओंके प्रति अपने आदर्शवाद के कारण उपेक्षा दिखानेवाला डॉ· खन्ना यथार्थ और स्वाभाविक पुरुष के रूप में हमारे सामने नहीं आता।

१· देशद्रोही : यशपाल : ४२·

प्रणय के क्षेत्र मे डॉ• खन्ना उदार -हृदयवाला हैं। अपनी पत्नी राजदुलारी के लिए सभी प्रणय निवेदनों को ठुकरानेवाला यह प्रेमवीर जब यह समझता हैं कि उसकी प्रेमदेवी अब बद्रीबाबु जैसे चालाक कांग्रेस नेता की पत्नी बन गयी हैं, तब वह राज को दोष नही देता। वह कहता हैं, "राज ने मेरे प्रति विश्वास घात नहीं किया, मुझे पाने की संभावना और आशा न रहने से ही उसने दुसरी ओर आँख उठाई -- जिसे इतना स्नेह करता हूँ उसके जीवन को बरबाद क्यों करूँ ? वह जहाँ है सुखी रहे। " [१]

डॉ• खन्ना के इस प्रेमादर्श के कारण अनेक आलोचकोंने उसे मानसिक दुर्बलता सें पूर्ण नामर्द नायक माना हैं। परंतु सुक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो खन्ना का चरित्र पुर्ण विकसित, बहुमुखी और स्वाभाविक लगता हैं। जीवन में आनेवाली अप्रत्यक्षित परिस्थितियों के कारण बह जानेवाला वह साधारण पात्र नही हैं। बल्कि वहएक असाधारण परिस्थिति में पनपनेवाला असाधारण पुरुष पात्र हैं।

डॉ• खन्ना कर्तव्यदक्ष डॉक्टर हैं। युध्द के दिनो में सेना मे भर्ती होकर देश की सेवा का व्रत लेनेवाला डॉ• खन्ना सचमुच ही एक कर्तव्य परायण डॉक्टर हैं। वह पैसोंके लिए डॉक्टरी नहीं करता, सिर्फ जनसेवा के लिए डॉक्टरी करता हैं।

अफगाणीस्थान में पोस्तीन के व्यापारी अब्दुल्ला का इलाज वह दास होकर भी करता हैं। परिणाम स्वरूप अब्दुल्ला उसपर पुत्रवत प्यार करता हैं। चंदा जब कोठे से गिर जाती हैं तब उसपर वह दिनरात एक करके इलाज करता हैं। अपने कर्तव्य मे किसी भी प्रकार के स्वार्थ की बदबु को वह कभी स्थान नही देता।

डॉक्टर खन्ना न सिर्फ डॉक्टर ही हैं बल्कि वह साम्यवादी दल का सक्रिय कार्यकर्ता भी हैं। वह मजदूरों का संगठन करता हैं। उसके विचार प्रगतिशील हैं। नारी शोषण के बारे में उसके विचार अत्यंत तीव्र

---

[१] देशद्रोही : यशपाल : पृष्ठ १४९

हैं , "पशु की भांति यह संबकुछ क्यों सहती हैं ? ------- प्रतिकार क्यों नहीं करती ? क्या यह मुनुष्य नहीं हैं ?" [१]

मजदूर आंदोलन में डॉ॰ खन्ना की गहरी आस्था हैं। वह सिर्फ मजदूर आंदोल के कार्य के लिए कई संकटो को साहस से पार करता हुआ भारत आता हैं। शिवनाथ जैसे कांग्रेस सोशालिस्ट का डॉ॰ खन्ना साम्यवादी सार पर विरोध करता हैं। १९४२ के भारत छोडो आंदोलन मे शिवनाथ एक ओर मजदूरोको मिल कोआग लगाने तक भडकाता हैं तो दूसरी ओर डॉ॰ खन्ना जी जान से भारत छोडो आंदोलन को सहकार्य न करनेका कम्युनिस्टोंका आदेश पालन करता हुआ शिवनाथ के मजदूरों की पिटाई का शिकार हो जाता हैं। शिवनाथ डॉ॰ खन्ना को २४ घण्टे के अन्दर कानुपुर छोडने की सलाह देता हैं नही तो जाली पासपोर्ट से भारत प्रवेश के अपराध में उसे पुलिस मैं पकडवा देने की धमकी देता हैं।

यही घटना डॉ॰ खन्ना के दु:खमय जीवन का चरमोत्कर्ष मानी जाती हैं। पिटाई से घायल डॉ॰ खन्ना सहारे के लिए अपनी पत्नी राज के यहाँ रानीखेत जा निकलता हैं। उसके साथ चंदा भी होती हैं। राज के घर जानेपर राज उसे सहारा नही देती। वापस आते समय चंदा का पति राजाराम चंदा की पिटाई करता हैं और डॉ॰ खन्ना को धूर्त बदमाश और देशद्रोही कहकर चंदा को घसिटता हुआ घर ले जाता हैं। अनेक यंत्रणा ओको सहनेवाला यह वीर कामरेड राजाराम के इन शब्दोंसे टूट जाता है। अपने आपको सभालता हुआ दु:खभरे शब्दोमे वह चंदा से कहता है , "चाँद, मैं देशद्रोही नहीं हूँ ------ चाँद उनसे कहना ----- हाँ साहस से।" [२]

यशपाल के सभी उपन्यासोंमे देशद्रोही का डॉ॰ खन्ना सच्चा साम्यवादी "ट्रैजीडी किंग" हैं। सभी यातनाओंका साम्ना करता हुआ यह डॉक्टर अंतिम क्षणतक अपनी कम्युनिस्ट आस्थापर दृढता से डटा हुआ दीख पडता हैं।

१॰ देशद्रोही : यशपाल : पृष्ठ ८८
२॰ देशद्रोही : यशपाल : पृष्ठ २७१

२: राजदुलारी

प्रारंभ में एक फौजी डॉक्टर भगवानदास खन्ना की पत्नी के रूप में राज एक सामान्य भारतीय नारी लगती हैं। अपने पति के मरने की झूठी खबर पाते ही पतिव्रता राज दु:ख से बेहोश हो जाती हैं। वह अफीम खाकर खुदकुशी करनेका भी प्रयत्न करती हैं। पतीके वियोग के कारण राज प्रारंभ में पागल जैसी दीख पडती हैं।

ऐसी घुटन भरी स्थिति से राज अत्यंत नाटकीय रीतीसे बाहर आती हैं। बद्रीबाबु जैसे गांधीवादी कांग्रेस नेता और शिवनाथ के सहवास से वह धीरे धीरे यह जान लेती हैं कि गृहस्थ जीवन के कोल्हू से बाहर भी एक स्वतंत्र दुनिया हैं। जहाँ उसे करने के लिए ढेर सारा कार्य पडा हैं। राज धीरे धीरे कांग्रेस के कार्य मे हिस्सा लेती हैं। राज के चरित्र का विकास दादा कामरेड की "शैल" की तरह आधुनिक स्तरपर परंतु मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोन के आधारपर हुआ हैं।

बद्रीबाबु के साथ विवाह बध्द होनेपर राज समाज कार्य में पडती हैं। राज यशपाल का प्रतिनिधि पात्र माना गया हैं। वह प्रगतिशील नारी हैं। अपने पति के विरह में वह अपने जीवन को निर्माल्य नहीं करती परंतु पति के पीछे वह दुसरा विवाह करके अपने पतिव्रत धर्म को दो बार निबाहती हैं। नारी को अपने परिवार की संकीर्णता से निकालकर दुनिया के विशाल प्रांगण में स्वच्छंदता से विहार करते देखना यशपाल का उध्देश्य रहा हैं। अपने उध्देश्य को अनुसार यशपाल ने राज का चित्रांकन किया हैं।

नारी को अपने मन के अनुसार जीवन जीने का अधिकार होना चाहिए। नारी के अधिकारों के संबंध मे यशपाल के ये प्रगतिवादी विचार उपन्यास में कई जगह बिखरे पडे हैं। "राज" स्वयं कुछ नही कहती। उसके निर्णय के बारे में डॉ॰ खन्ना तथा उसकी बडी बहन चंदा

ही अपने विचार व्यक्त करते हैं। दादा कामरेड की "शैल" स्वयं निर्णय लेने वाली और बचपन सेही आधुनिका हैं परंतु राज धीरे धीरे आधुनिका बन जाती हैं। वह "शैल" जैसी स्वच्छाचारी नहीं हैं।

उपन्यास के अंत में राज का चरित्र सच्चे अर्थ में मनोवैज्ञानिक और संघर्षमय बन जाता हैं। जब घायल खन्ना को आश्रय देने की मांग लेकर एक स्त्री "चंदा" उसके सामने भीख की झोली फैलाती हैं, तब राज उसे पति के रूप में स्वीकार नहीं करती। उसके मन में कुछ समयतक भयानक संघर्ष निर्माण होता हैं। परंतु अबकी राज पूरी तरह से प्रगतिशील नारी होने के कारण अपने प्रिय पतिको आसरा नहीं देती वह अपने दूसरे स्वमी ब्रद्रीबाबु और बेटा प्रसाद को मुसीबत मे न डालने के लिए ऐसा निर्णय लेती हैं। उसका यह निर्णय निश्चयही अकल्पनीय होनेपर भी अविश्वसनीय नहीं है कुछ पाठक यहांपर राज की स्वार्थता को देखकर उसे दूषण देते हैं। उनका मत हैं, यदि राज विप-ती में फंसे अपने पति को एक स्त्री के नाते सहारा देती तो उसका चरित्र निश्चयही उच्च बन जाता।

यशपाल का उद्देश्य नारी की महानता दिखाना नहीं है उनका उद्देश्य हैं नारी की आत्मनिर्भरता और प्रेम की उपयोगिता को दिखाना। यशपाल ने राज के रूप में नारी का एक अनोखा रूप ही दिखाया हैं। राज के आत्म निर्णय के कारण ही राज का चरित्र दृढ तथा संयमी बन जाता हैं।

"राज" प्रवाह पतिता नारी नहीं हैं बल्कि आत्मनिर्णय द्वारा परिस्थिति को अपने अनुकूल बनानेवाली असामान्य नारी है। राज कलंकिता नहीं हैं। दो दो पुरुषों के साथ पत्नी व्रत निबाहनेवाली वह एक आधुनिक पतिव्रता नारी हैं। वह आत्महनन के स्थानपर आत्मनिर्भरता को अधिक महत्व देनेवाली प्रतिशील नारी हैं।

३ : शिवनाथ :

प्रस्तुत उपन्यास का "शिवनाथ" "डॉ॰ खन्ना" का छात्र जीवन का साथी हैं। छात्र जीवन से ही उसमे समाजवाद के प्रति गहरी आस्था हैं। अपने सिध्दान्तों में उसके गहरा विश्वास हैं। बचपन में वह और डॉ॰ खन्ना सशस्त्र क्रांति के पक्के समर्थक थे। छात्र जीवन में उसने बम बनानेका प्रयास किया था, जिसके परिणाम स्वरूप वह निर्भयता से जेल भी गया था। जिसके परिणाम वह अपने उसूलोंपर चलनेवाला सच्चा देशभक्त दीख पडता हैं।

शिवनाथ की घरेलू स्थिति दयनीय होकर भी वह इसी क्रांती की आग में कदम रखता हैं। उसके सिध्दान्त अनुभवहीन होने पर भी उसकी गजब की देशभक्ति के कारण वह पाठकोंकी हमदर्दी पाता हैं। अपनी बहन "यमुना" को स्वावलंबी बनानेका प्रयत्न करता हुआ शिवनाथ डॉक्टर खन्ना की मृत्यु का समाचार प्राप्त होनेपर भी उसकी पत्नी "राज" की यथासम्भव सहायता भी करता रहता हैं। इस प्रकार वह आदर्श भाई और सच्चा मित्र भी हैं।

बदरी बाबु के साथ संबंध आनेपर शिवनाथ कांग्रेस सोशालिस्ट बन जाता हैं, और अंग्रेजो को युध्द में मदद न करनेके पक्ष में कांग्रेस के आदेशानुसार कम्युनिस्टो का विरोध करता हैं। दूसरी ओर कम्युनिस्ट पार्टी अंग्रेजो की युध्द नीति का समर्थ न करती हैं जिसका समर्थन डॉ॰ खन्ना करता हैं। इस संघर्ष में एक दिन शिवनाथ के मजदूर एक मिलको जलाते हैं। खन्ना उसका विरोध करता हैं। उसकी बुरी तरह पिटाई होती हैं।

वास्तवमे शिवनाथ डॉ॰ खन्ना का अंतरंग मित्र हैं, परंतु राजनीतिक सिध्दान्तों की दृष्टि से वह उसका एकदम विरोधी हैं। मित्रता के नाजुक बंधनो में आकर वह कभी अपने मित्र के साथ समझौता नही करता। जब खन्ना उसे आंदोलन के विरोध मे खडा होता हैं तब वह खन्ना को उसके बिना पासपोर्ट के रूस से भाग जानेका समाचार पुलिस को देने की धमकी दे देता हैं, और खन्ना को चौबीस घण्टो

मे फरार होने के लिए बाधित कर देता हैं।

इस प्रकार यशपाल ने कम्युनिस्ट खन्ना के विरोधमे कांग्रेस सोशालिस्ट शिवनाथ का निर्माण अत्यंत कुशलता से किया हैं। बदरीबाबु जैसे गांधीवादी नेता के संपर्क मे ऐसे कई सशस्त्र क्रांतिकारी आकर अपने उसुलोंको भूलते हुओ डॉ• खन्ना जैसे अपने ही साथियोंका विरोध कर रहे थे। शिवनाथ ऐसे छिपे रूस्तमों का प्रतिनिधि पात्र हैं। शिवनाथ के निर्माण। से यशपाल ने डॉ• खन्ना के चरित्र को और अधिक तेजोमय बनाया हैं। चरित्रचित्रण की कुशलता तो इतनी हैं, कि कहींपर भी शिवनाथ का चरित्र कलंकित नही हुआ हैं। इस प्रकार वह एक सच्चा मित्र, सच्चा देशभक्त, आधुनिक विचारोंवाला तेज युवक हैं। वह अनुभवहीन लगतों है, लेकिन कम्युनिस्टोंका विरोधी न होने के कारण यशपाल की संवेदना का समान अधिकारी हैं। यशपाल की कुशल कलाकारी का यह सर्वों-तम नमुना हैं।

३ : दिव्या - १९४५

[१] दिव्या - सामन्त युग मे पुरूष प्रधान समाजे में प्रताड़ित नारी "दिव्या" मकी करूण गाथा प्रस्तुत उपन्यास में आदि से अंततक चित्रित की गयी। दिव्यता सागल नगरी के वयोवध्द धर्मस्थ देवशर्मा की और जनपद कल्याणी राजनर्तकी मल्लिका की शिष्या हैं। दुर्भाग्य से उसके धनी माता पिता और पितामह तिनों कालकवलित हो गये। दिव्या ज्ञानी कलामर्मज्ञ और सुसंस्कृत थी। बचपन से ही उसे संगीत और नृत्य मे विशेष रस था। नृत्य संगीत कलाकौशल के परिक्षण के लिए जनपरिषद के तत्ववधान मे आयोजित एक विराट प्रतियोगिता में उसने "सरस्वती पुत्री की सर्वश्रेष्ठउपाधि प्राप्त की। इस प्रकार प्रारंभ में ही दिव्या सर्वश्रेष्ठ नृत्यसुदरी के रूप में सामने आती हैं।

आदर्श प्रेमिका - दिव्या एक आदर्श प्रेमिका भी हैं। मधुपर्व में सर्वश्रेष्ठ खड्गधारी की उपाधि से विभुषित पृथुसेन नामक दास की तरफ वह अपने आप आकर्षित होती हैं। द्विजकन्या का एक दास के साथ प्रेम करना उस जमाने का घोर सामाजिक अपराध था। परंतु दिव्या

अपने सहज प्रेम को सभी सामाजिक बनधनो से मुक्त करती हैं। पृथूसेन के सुध्दपर जाने के पुर्व ही उसे अपना सर्वस्व अर्पण कर देती हैं। पृथुसेन के सुध्दपर जानेपर उसके विरह में दुष्यंत की शकुन्तला के रूप में दिव्या तडपती रहती हैं, "दिव्या क्षण पर्यंक परक्षण पीठिका पर बैठती क्षण कक्ष मे और क्षण बाहर उद्यान मे ठहरती। उसे कहीं चैन न था। पल पल वह तृषा अनुभव कर छाया से जल मांगती और जलपात्र समीप रख घूंट भरना भूल जाती। " [१] दिव्या की आत्म विस्मृत अवस्था का इससे सुन्दर वर्णन कहां मिलेगा।

-हदयसे उदार - दिल से पृथुसेन को अपना सर्वस्व अपर्ण करनेवाली दिव्या को जब वह मालुम होता हैं कि पृथुसेन का विवाह "सीरो" सेहुआ हैं, तब वह अत्यंत विशाल अंत:करण से "सीरो" के साथ सख्यभाव दिखाती हैं। उसके -हदय की उदारता इन शब्दोमे प्रगट होती हैं।

"क्या सीरो भी मेरे साथ आर्य की पत्नी नहीं बन सकती ? एक वृक्ष की छाया मे अनेक प्राणी विश्राम पाते हैं। गजराज की अनेक पत्नियां होती ", उसी प्रकार आर्य की भुजा के आश्रय में हम दोनों ही रहेंगे ? " [२]

प्रखर आत्मसंमानी - दिव्या प्रखर आत्मसंम्मानी नारी हैं। पृथुसेन अस्वस्थता का बहाना बनाकर जब अुससे मिलता नहीं चाहता वह मूक और स्तब्ध हो जाती हैं। पृथुसेन से प्राप्त गर्भ की रक्षा करने के लिए अपने सुख साजोको ठूकराकर वह ब्रासित पुरोहित के यहां यातनामय दास्यत्व भी स्विकारती हैं। वहांपर वह "दारा" दासी बन जाती हैं। यथावकाश उसे पुत्रप्राप्ति हो जाती हैं परंतु उसका दूध उसे मालिक के पुत्र को पिलाना पडता हैं और उसका बेटा वैसाही भूखा रहता हैं। यशपाल ने अत्यंत करुणार्द्र होकर यह प्रसंग

---

१. दिव्या : यशपाल : पृष्ठ ७७

२. दिव्या : यशपाल : पृष्ठ ९३

चित्रित कीया हैं। दारा की विवशता, और करुण गाथा को पढकर कविवर्य मैथिलीशरण गुप्तजी की करुणापुर्ण पंक्तियाँ याद आती हैं,

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल मे हैं दुध और आँखो मे पानी।। [१]

इतने संकट आनेपर भी दिव्या ने अपना स्वाभिमान किसीको भी बेचा नहीं हैं, वह अंतीम समय तक प्रखर आत्मसम्मानी नारी रही। उसकी स्थिति गाय की तरह थी, " वह सोचती, क्या उसकी संतान के लिए जीवन का अधिकार नही ? " [२]

यशपाल ने दिव्या के दास्यजीवन के वर्णन द्वारा सामंत काळीन दास जीवन की यातनाओं और दु:खोका सजीव चित्रण किया हैं। दिव्या आत्मनिर्भर और स्वयंपूर्ण जीवन जीनेवाली नारी हैं। अपने क्षुधापीडित बच्चेका पोषण करनेके लिए वह बौध्द विहार का आश्रय लेती हैं, लेकिन उसे वहासे यह कहकर दुत्कारा जाता हैं, "वेश्या स्वतंत्र नारी हैं, शरण तुम्हें नही मिल सकती, वेश्या को मिल सकती हैं। [३] अत: वह वापस आकर अंशुमाला वेश्या के रूप में स्वतंत्र नारी का जीवन जीने का साहस भी दिखाती हैं। इस रूप मे उसे धन, मान और सुख मिलता हैं।

इधर यशपाल नगरी की राजनर्तकी "मालिलका" की उत्तराधिकारिणी के रूप में फिर एक बार जब दिव्या को अंशुमाला के रूप मे सामंत लोग देखते हैं तब वे उसका विरोध करते हैं। मद्र में व्दिजकन्या का वेश्या के पदपर आसीन होना किसीको भी पसंद नही हैं। तिरस्कृत और अपमानित दिव्या अपने आत्मसंम्मान के कारण नगर व्दार छोड देती हैं।

सबला दिव्या - दिव्या यहापर स्वयंको पुरुष के सम्मुख दुर्बल

---

१. यशोधरा : खंडकाव्य मैथिलीशरण गुप्त
२. दिव्या : यशपाल : पृष्ठ ११२
३. दिव्या : यशपाल : पृष्ठ १६५

नही समझती। आर्य रुद्रधीर के प्रणय निवेदन को इसी कारेण ही ठुकरा देती हैं। दिव्या बौध्दिक रुप से अत्यंत दृढ और सबला नारी हैं। वह संघर्ष शील, आत्मनिर्भर व्यक्तिमूलक अहंवाद की प्रतीक हैं। वह भिक्षु पृथूसेन की शरणमे भी नही जाती। उसके विचार में भिक्षु धर्म निवृ-तिका मार्ग हैं। इसलिए अंतमे प्रवृ-तवादी और प्रगतिशील चार्वाक मारिश का आश्रय ग्रहण कर लेती हैं। वह कर्म मे ही जीवन का कल्याण मानती हैं।

इस प्रकार यशपालने दिव्या को सामंत युगीन नारी के रुपमें किया हैं और आधुनिक प्रगतिवादी धरातलपर खडा किया हैं। सामंती युग मे नारी की परतंत्रता, उसपर पुरुष के एकाधिकार की भावना आदि का चित्रण समाजवादी यथार्थ के दृष्टिकोन से किया हैं। उपन्यास की ऐतिहासिकता को बनाए रखकर भी यशपाल ने अत्यंत कलात्मकता से स्त्री मुक्ति और स्त्री स्वतंत्रता के क्रान्तिस्वर को मुखारित कीया हैं।

मारिश

सागल के सर्वश्रेष्ठ मुर्तिकार पुष्यकान्त का बेटा मारिश अपने पिता की तरह नास्तिक और प्रवृ-तवादी हैं। दिव्या की कला और सौंदर्य के प्रति ही नहीं उपितु स्वयं दिव्या के प्रति ही वह प्रथम आकृष्ट होता हैं। रत्नप्रभा वेश्या के प्रासाद में ही मारिश का चरित्र अधिक पला और पुष्ट हुआ हैं।

मारिश जब अंशुमाला के रुप में वेश्या बनी दिव्या के संपर्क में आता हैं, तब उसका भौतिकवादी जीवन दर्शन अधिक स्पष्ट होता हैं। उसके माध्यम से यशपाल ही अपने जीवन दर्शन विषयक विचार स्पष्ट करते हैं।

मारिश एक श्रेष्ठ प्रवृ-तवादी दार्शनिक हैं। परलोक, पाप पुण्य, धर्म - अधर्म आदि निवृ-तवादी बातोंपर अविश्वास प्रकट करता हुआ वह प्रगतिशील विचारोंका प्रतिनिधित्व करता हैं। परलोक की कल्पना का खंण्डन करते हुअे वह एक मद्यपी युवक से कहता हैं, " मूर्ख, तूने और तेरे स्वामी ने परलोक देखा हैं ? सही विश्वास तेरी दासता हैं। [१]

---

१ •

मारिशा के अकाट्य तर्क और उसके प्रगतिवादी विचार पाठकों को मग्न करने में बाध्य करते हैं। दास प्रथा, परलोक, वेश्या वृत्ति, सत्य निष्ठा, आदि विषयोपर उसके विचार विशुद्ध भौतिकवादी हैं। उसके इन्ही विचारोंके प्रभाव के कारण ही दिव्या अंत में उसे अपना लेती हैं।

इस प्रकार यशपाल के विचारोंका प्रचारक मारिश एकमात्र पात्र होने के कारण अन्य पुरुष पात्रों से अधिकगतीमान और जीता जागता लगता हैं। अपने प्रगतिशील सांख्य दर्शन का वह अकेला प्रचारक हैं। वह यशपाल के विचारों का प्रतिनिधि पात्र हैं।

४ : पार्टी कामरेड - १९४६

१ : गीता - "दादा कामरेड" की शैल की तरह गीता भी संपन्न परिवार की होकर भी पक्की कम्युनिस्ट हैं। शैल की उच्छंखलता को हटाकर यशपाल ने मानो गीता का पात्र दोषहीन बनाया हैं। वह साहसी , त्यागी परिश्रमी और अपनी मर्यादा को पहचानने वाली भारतीय लडकी हैं।

सच्ची कम्युनिस्ट - रिसर्च स्कालर छात्रा होकर भी वह देश सेवा करनेकी इच्छा रखती हैं। प्रथम वह कांग्रेस की स्वयंसेविका बनकर पार्टी के लिए चंदा इकठठा करनेका कार्य करती हैं। बादमें वह कम्युनिस्टों की ओर आकृष्ट होती हैं। पार्टी के प्रचार पत्रक सिनेमा घरों के सामने बेचकर वह पार्टीका प्रचार वफादारी से करती रहती हैं कीमती ब्लाउज के लिए रखे हुओ पाँच रुपये पार्टी के काम के मजदूर कल्याण के लिए लगानेका विचार करनेवाली यह लडकी शैल से कई गुना समझदार दीख पडती हैं। पार्टी के लिए अपने गले का लौकेट तक देने के लिए वह तैयार रहती हैं। पार्टी ही उसके लिए सबकुछ हैं।

आत्मसम्मानी लडकी - गीता आत्मसम्मानी हैं। एक जगह वह कहती हैं , "लडकी का कुछ सेल्फ रिस्पेक्ट भी तो होता हैं।"[१]

---

१. पार्टी कामरेड : यशपाल : पृष्ठ २६

शैल जैसी वह नारी स्वतंत्रता का उपयोग हर किसी की हम बिस्तर बनने के लिए नहीं करती। स्त्री की स्वतंत्रता का अर्थ अपने आत्मसम्मान को बेचना उसे कतई स्वीकार नहीं हैं। पदुमलाल भावरिया जैसें गुण्डे के संपर्कमे आनेपर जब वह उसकी इज्जत को स्पर्श करना चाहता हैं, तब अत्यंत निडरतासे उसके भी कान खींचने मे वह नही हिचकती। पदुमलाल भावरिया की संगती मे रहकर उसने अपूर्व साहस कापरिचय दिया हैं।

प्रभावी अपूर्व व्यक्तिकत्व - गीता के चरित्र का सबसे अछुता पहलू यह हैं कि वह पारस जैसी हैं। उसके व्यक्तिमत्व के प्रभाव मे पदमलाल भावरिया जैसा बम्बईका गुण्डा भी जब आता है तब कम्युनिस्ट बन जाता हैं। गीताकी सिर्फ प्यार भरी निगाह के लिए वह नौसेना विद्रोह मे अजीब साहस दिखाता हैं और शहीद बन जाता हैं।

आत्मनिर्भर नारी - गीता आत्मनिर्भर नारी हैं। अपने लिए कोई दूसरा पुरुष टिकट निकाले यह उसे पसन्द नहीं हैं। वह कहती हैं, "यदि खर्च का बोझ उठाना मर्द की जिम्मेदारी हैं तो मर्द से ऐसी सहायता पाने का मुल्य चुकाना स्त्री की जिम्मेदारी होगी।" [१] गीता इसी लिए आत्मनिर्भर रहना चाहती है कि कोई मर्द उसका नाजायज फायदा न उठाए।

गीता स्वयं अदम्य साहसी और धुन की पक्की नारी हैं। उसके चरित्र के बारे में गलत खबरो का प्रकाशन पार्टी व्दारा उसका निष्कासन तथा घरवालों का सख्त विराध इन सभी संकटोंका वह डटकर सामना करती हैं। गीता ने इन प्रसंगोंमे अपनी नारीगत दुर्बलताओंपर विजय पायी हैं। पार्टी के सभी कार्योंमें वह पुरुषोंके कधोसे कंधा मिलाकर कार्य करती रहती हैं। यहापर वह शैलसे भी दो कदम आगे निकलती हैं।

उपन्यास केअंत में गीता का चरित्र सचमुच ही अत्यंत उज्वल दीख पडता हैं। जुलुस में घायल देशभक्तो की वह दिनरात एक करके सेवा करती

---

१. पार्टी कामरेड : यशपाल : पृष्ठ ५७.

रहती हैं। उसका प्रेमी, "पदमलाल भावरिया जख्मी होकर आया हैं। " [१] यह पुंजी देखकर भी अपना कर्तव्य छोडकर वह उसे मिलने नहीं जाती। पार्टी का कार्य ही उसका सर्वस्व हैं। पार्टी के सेक्रेटरी की इजाजत पाये बिना वह भावरिया से मिलने नहीं जाती। अपने प्रेमसे भी अपने पार्टी के उसूलों को वह अधिक महत्त्व देती हैं। उसका यह असीम त्याग ही उसके चरित्र में चार चाँद लगा देता हैं।

- पद्मलाल भावरिया -

बम्बई में व्यापार के हेतु आये हुअे भुला मोदी का पद्मलाल इकलौता बेटा हैं। उसके पिता अनपढ होने के कारण अपने पुत्र को विद्याविभूषित करने के हेतु अंग्रेजी स्कूल में भर्ती करते हैं। मोदीजी अपने बेटे को लक्ष्मीनारायण का प्रसाद मात्र समझ बैठते हैं। वे चाहते हैं कि उनका बेटा पूजा पाठ के संस्कार सीखें। उसकी शादी हो जाती हैं। पिताजी के स्वर्गवास के बाद वह और अधिक उच्छृंखल बन जाता हैं। अपने पैसों के बलपर कुछ गुण्डोंको पालना और आवारा गर्दी करना उसका जीवनक्रम ही बन जाता हैं। वह निर्बंध जीवन जीने का आदि हो जाता हैं। शराब, होटले का खाना नयी नयी लडकियों को फँसाना, मारपीट करना इन कारनामें के कारण अच्छे घरानेका यह लडका लोगो की नजरोंसे उतर जाता हैं।

यशपाल ने यहाँ पद्मलाल को पूँजीपति वर्ग के प्रतिनिधि पात्र के रूप में चित्रित किया हैं। अपने पैसों के बलपर अनेकानेक वामाचार करते रहने में उसे जरा भी झिझक नहीं हैं।

गीता जब उसे पहले पहल सिनेमा गृह के सामने मिलती हैं तब उसे सिर्फ हथियाने की वासना के कारण ही उसने उसकी पार्टी का प्रचार पत्रक खरीद लिया था, और बादमें भी वह नियमित रूप से उसे खरीदता रहा। इस प्रकार एक बदचलन व्यक्ति भी पार्टी की सहायता अप्रत्यक्ष रूपसे करता रहता हैं।

पद्मलाल भावरिया के चरित्र की विशेषता यह हैं कि वह मैली हसर्द लडकियों के साथ ही पेश करता रहता हैं। किसी सभ्य लडकी के साथ वह ऐसी आवारा गर्दी नही करता। वह स्वभावसे आवारा नहीं हैं, कुसंगति में फंसकर वह अपनी नीयत खो बैठा हैं। उपन्यास में गीतासे वह इतना प्रभावित होता हैं कि कहीं भी उसके साथ आपत्तिजनक व्यवहार नहीं करता। सिर्फ माटुंबा क्लब में ही वह एक बार हद से जरा बढ जाता हैं। परंतु गीता की फटकार उसके मानस को झकझोर कर रख देती हैं। अनेको औरतो को हमबिस्तर करनेपर भी वह गीताके सामने आंख उठाकर देखता भी नहीं। गीता के प्रति उसका विशेष अंतरंग प्रेम हैं। गीता के व्यक्तित्व के प्रभाव के कारण वह उसके कहनेपर शराबियों की संगति भी छोड देता हैं।

इस प्रकार लेखकने पद्मलाल के जीवन में गीता के रूप में बिजली का अकस्मिक आगमन दिखाकर उसका चरित्र बदल डाला हैं। लोग उसे गुण्डा कहते हैं परंतु उपन्यास में कही भी उसका गुण्डापन नजर नहीं आता।

राजनीतिक दृष्टिसे वह पहले कांग्रेस निष्ठ था परंतु बादमे गीता के प्रभाव से इस निष्ठा को छोड देता हैं, और कम्युनिस्टों के प्रति आकर्षित होता हैं।

उपन्यास के विविध घटनाचक्रों में फंसा पद्मलाल उपन्यास के अंत में एक सामाजिक जिम्मेदारी को निभाता हुआ "सच्चा देशभक्त" ही लगता हैं। नौसेना के जुलुस में वह पूंजीपति से एक साधारण आदमी बन जाता हैं। पुलिस के विरोध में वह जो असीम साहस दिखाता हैं वह उसे उच्च कोटि के देशभक्तों की पंक्ति में ला बिठाता हैं।

वह एक सच्चा कामरेड देशभक्त और सच्चा प्रेमी भी हैं। अंतमे सिर्फ गीता से मिलनेकी इच्छा मनमें रखकर वह उसकी राह

देखता हुआ शहीद हो जाता हैं।

इस प्रकार भावरिया के चरित्र के माध्यमसे यशपालने यह सिध्द किया हैं कि पूंजीपतियों को भी अपनी नीति छोड़ कम्युनिस्ट नीति को अपनाना चाहिए।

५ : मनुष्य के रूप १९४९

१ : सोमा -

पुरुष प्रधान समाज में हजारों वर्षो से पीड़ित नारी की वेदना को "सोमा" के चरित्र के माध्यम से लेखकने प्रस्फुरित किया हैं। "सोमा" के चरित्र के विकसित रूप दिखाना लेखक की मूल उध्देश्य होने के कारण "सोमा" प्रस्तुत उपन्यास की नायिका बन गयी हैं। उपन्यास मे कहीं भी "सोमा" प्रत्यक्ष रूप से लेखक के विचारो वाली प्रगतिशील नारी नहीं दीख पड़ती, जैसे शैल, तारा तथा इसी उपन्यास की मनोरमा। परंतु लेखक ने सोमा के मनोविश्लेषणात्मक चरित्र चित्रण ध्दारा अपने विचार स्पष्ट करनेका प्रयास किया हैं।

सोमा "निम्न" वर्ग की विधवा हैं। जो अपना दुख सिर्फ सहती ही हैं, और समाज उसे सिर्फ लूटता ही रहता हैं। कथा के प्रारंभ में वह एक जवान विधवा के रूप में सामने आती हैं। सास ससुर के अत्याचारोंसे पीड़ित "सोमा" प्रारंभ मे अत्यंत दुखी हैं। अपने साथ घरवालोंके पशुत्व पूर्ण व्यवहारोंसे उबकर वह कहती हैं, "यह लोग समझते हैं कि इन्होंने चार सौ रुपयों मे पशु खरीदा हो। जीता है तो काम इनका, मरता हैं तो चाम इनका।" [१]

इसी अन्यायपूर्ण व्यवहार से उबकर ही उसका स्वतंत्र मन धनसिंह जैसे ड्रायवर के साथ भाग जाने में भी नहीं चिकता। धनसिंह के साथ भाग जाना उसके मनकी स्वतंत्र वृत्ति का द्योतक हैं। वह अनाड़ी हैं परंतु अन्याय को कभी बर्दाश्त नही करती। धनसिंह के पुलिस की

---

१. मनुष्य के रूप : यशपाल : पृष्ठ १७

हिरासत में जानेपर अपने एकमात्र सहारे को छुडवानेके लिए वह पुलिस को अपना शरीर समर्पित करती हैं। ऐसे समर्पण में असे किसी भी प्रकार की अनीति की गंध नहीं आती। और इसी प्रसंगसे एक निर्जीव यंत्र की तरह वह परिस्थिति के सामने झुकती हुअी जीवन में आये हर पुरुष की राते रंगीन करती हुअी नजर आती हैं। दादा कामरेड की "शैल" शिक्षित हैं तो यहाकी सोमा गंवार हैं (इतनाही) दोनो में फर्क हैं।

बॅ• जगदीश सरोलाजी के घर मनोरमा के सहवास में सोमा बिल्कुल आधुनिका बन जाती हैं। यहीं पर भी सिर्फ सहारे के लिए ही वह बॅ• सरोलाजी को खुश करती रहती हैं।

इतना सहकर भी "सोमा" अपने लावण्य के बल पर फिल्म जगत तक पहुचती हैं। "बरकत" ड्रायवर के सहारे वह बम्बई पहुँचती हैं और न चाहकर भी अपनी स्वतंत्र जिन्दीगी के लिए बरकत जैसे बदचलन और शराबी गुण्डेको सर्वस्व अपर्ण कर देती हैं। एक अनपढ औरत होते हुअे भी जीवन की हर चुनौती का स्वीकार वह जिस अदम्य साहस के साथ करती है, वह सचमुच ही सराहनीय हैं। बरकत की रण्डी बनकर रहना उसे पसंद नहीं हैं। वह अपना स्त्रीत्व कहीं भी बेचती नहीं। परिस्थिति मे फंसनेके कारण उसे अपने स्त्रीत्व को केवल सहारे के लिए दाँवपर लगाना पडता हैं। जैसे ही परिस्थिति उसके चरणों पर झुकती हैं वह प्रसिध्द अभिनेत्री "पहाडन" बन जाती हैं, तब वह न धनसिंह को चाहती है न बरकत को।

परंपरागत गंदगी की गर्तमें पडी यही गवार सोमा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रगतिशील नारी हैं। लेखकने अत्यंत कुशलता से इस पात्र का चित्रण किया हैं। सोमा का पहाडन बनना उसका चारित्रिक पतन नहीं हैं बल्कि "जीवन यापन का एक मार्ग हैं। जिस दुनियाने उसके शील का गला घोटा उसी बाजारु दुनिया का उसने लिया हुआ बदला भी हो सकता हैं।

सोमा हरदम किसी न किसी ठोस सहारेको चाहती हैं। वह कहती हैं "दुनिया मेरे गलेमें बाहे डालकर खेलना चाहती हैं, परंतु बाँह थामकर सहारा देने के लिए कोई तैयार नहीं। " [१]

यशपाल की नारी विषयक धारणाके अनुसार सोमा परिस्थितियोंसे संघर्ष करती हुअी समर्थ नारीका बन गयी हैं। वह परिस्थिति का खिलौना बनकर नहीं रही। जो सोमा मनोरमा के घरमें साड़ी पहननेमें लज्जा महसुस कर रही थी वह "पहाड़न" बनकर सिनेमारिकाओंके अनुकूल वस्त्र पहनकर अभिनय करनेसे भी नहीं घबराती। वह परिस्थिति को बनानेवाली हैं न कि परिस्थिति की दास।

सोमा के चरित्र मे एक ही स्वामी हैं उसमें स्वतंत्र व्यक्तित्व का अभाव हैं, परंतु वह निम्न वर्गकी पीड़ित नारियों मे नया जीवन बसानेकी उमंग जरूर पैदा कर देती हैं।

२ : धनसिंह -

धनसिंह अत्यंत निर्धन परिवार का हैं। उसकी माँ बचपन में ही चल बसी थी। गाँवमे अपने ताऊजी के घर में अनेक छोटे मोटे काम करनेवाला धनसिंह पिताजी की मृत्यु के बाद अपने परिवार के लिए मुलीगिरी, खच्चर हाँकना क्लीनरी करता हुआ ट्रक ड्रायवर बन जाता हैं।

धनसिंह कठिनाई के साथ जूझनेवाला होने के कारण वह स्वभाव से रूखा हैं। अनपेक्षित दूर्घटना के घटते ही वह सड़कपर आयी सोमा को कई गालियाँ देता हैं। वह एक और शीघ्रकोपी हैं तो दूसरी ओर संवेदनशील -ह्दयका भी हैं। सोमा पर होनेवाले अन्याय सुनकर वह उसे सहारा देकर अपना बना लेता हैं।

धनसिंह सच्चा प्रेमी हैं और अंततक अपने प्रेमको निबाहता

१• मनुष्य के रूप : यशपाल : पृष्ठ २६७

रहता हैं। सोमा पर पहले उसका जितना प्रेम हैं उतनाही प्रेम जब वह उसे पहाड़न के रूप में देखता हैं, तब भी हैं। सोमा के चरित्रकी गिरावट उसके प्रेम में कोई बाधा नहीं पहुँचाती।

धनसिंह रिश्वतखोरी का दुश्मन होने के कारण पुलिस का विरोधी बन जाता हैं। वह सच्चा देशभक्त हैं। जेल से छूटनेपर वह आजाद हिन्द सेना का सेनानी बन जाता हैं और अंग्रेज फौज का विरोध करने की राष्ट्राभिमानी उमंग मनमे रखता हैं।

धनसिंह स्वाभिमानी हैं। अपनी प्रियतमा की ओर वासना भरी निगाहसे घूरनेवाले पुलिस की वह लातों और घूंसों से पिटाई करता हैं।

यशपाल ने धनसिंह को चुनाहैं निम्नतर वर्गसे परंतु वह यथायोग्य प्रगतिशील पात्र नही लगता। "सोमा" को स्वकार करनेवाला उसका एकमात्र रूप ही जरासा प्रगतिवादी लगता हैं। परंतु यहीपर भी वह अपनी परंपारावादी दृष्टि को छोड़ता नहीं हैं। इस प्रकार वह एक साधारण पात्र मात्र रह जाता हैं।

३ : मनोरमा -

मनोरमा, धर्मशालाके रईस लाला ज्वालासहाय की एकमात्र संतान हैं। वह अत्याधुनिक विचारोंवाली पढी लिखी नारी हैं। उसके विलायतीपन के बारेमें स्वयं लेखक ही कहते हैं, "मनोरमा लाहौर कॉलेज में एम. ओ. पढ रही थी और विलायत जाने का अरमान रखती थी, मनोरमा पतलून पहने, नंगे सिर, खूब बड़े कुत्ते को चमड़े की रस्सी थामे, लाठी लिए सुनी सड़को पर सैर करती फिरती थी [१] मनोरमा धनी समाजके पैदा होकर भी घमण्ड उसमे जरा भी नहीं हैं। लाखो की मालिका होनेपर भी वह भूषण जैसे सामान्य कामरेड की ओर आकृष्ट होती हैं, उसका आदर तथा उससे प्रेम भी करती रहती हैं।

मनोरमा सच्चे अर्थ में साम्य वादी हैं। सोमा जैसी गँवार और अनाथ स्त्री के साथ उसने सदैव समानता का व्यवहार किया हैं। उसका -हदय विशाल हैं। गरीबो के प्रति उसके मन में सदैव आस्था हैं। गरीब सोमा को अपने घर में सहारा देना उसे अच्छे कपडे देना तथा अपने घरमें उसे बराबर का स्थान देना ये सभी मनोरमा के विशाल मनके ही उदाहरण हैं। इतना ही नहीं, जब सोमाके "पहाडन" बननेपर उसके साथ अपने पति के नाजायज संबंध देखती हैं, तब भी वह उसे "सोमा"बहन के आदरवाचक संबोधन से ही पुकारती हैं।

मनोरमा स-हदयी हैं। दूसरोंका दु:ख दूर करने के लिए वह अपने सुखका भी त्याग करती हैं। किसी महिला की नौकरी जाते देख वह स्वयं त्यागपत्र देकर उस महिला को सहारा देती हैं।

"मनोरमा" आधुनिक प्रगतिवादी विचारों की नारी हैं। वह पुराने रस्मरिवाजोंपर विश्वास नहीं करती। पुरानी विवाह पध्दती को छोडकर सिविल मॅरेज करनेका वह निश्चय करती हैं। अपने पति का चुनाव स्वयं करने वाली वह स्वतंत्रताप्रिय नारी हैं।

प्रेम और शादी के बारेमें उसके विचार बिल्कुल स्वतंत्र हैं। लेखकने उन्हे इस प्रकार स्पष्ट किया हैं, "सहसा उसके मस्तिष्क में विचार कौंध गया सभी स्त्रियाँ आश्रय का मुल्य प्रेम का मुल्य अपने शरीर से चुकाती हैं। आत्म निर्भर प्रेम तो वही हैं जो मुल्य में आश्रय न माँगे। --------- प्रेम करनेका अधिकारी वही हैं, जो आश्रय न माँगे, जो अपने पाँवपर खडा हो ----------" [१]

पहले पहले वह अपने सहपाठी और सम विचारी कामरेड भूषण से प्यार करती हैं। असके प्रेम में साहचर्य की आसक्ति और हीन वासना नही हैं बल्कि उसमें हैं सयंतता और गहराई। सुतलीवाला को पति के रुप में स्वीकृत करनेपर भी जब वह उसे पुरुषत्वहीन पाती हैं तब बिना जल्दबाजी किये उससे तलाक भी लेती हैं। वह इतनी स्वाभिमानिनी हैं कि पति से मिलनेवाले माहवार गुजारे का भी स्वीकार नहीं करती।

---

१. मनुष्य के रुप : यशपाल : पृष्ठ १७४

तलाक के बाद भूषण के साथ शादी करते समय भी वह इतनी उतावली नही दीख पडती ।

इस प्रकार यशपाल ने मनोरमा के रूप में एक मर्यादाशील आधुनिक नारी का निर्माण किया हैं। गौण पात्र होकर भी यशपाल के प्रगतिशील विचारोंका प्रतिनिधित्व करने के कारण यह पात्र पाठको के विशषे रूप से प्रभावित किए बिना नहीं रहता।

उपन्यास के अंत में अपने पति के मृत्यु की खबर मिलते ही वह मूर्च्छित हो जाती हैं। जीवनभर दूसरों के लिए जीजनेवाली मनोरमा की यह मरणासन्न अवस्था देखते ही लेखक के साथ हम भी कह उठते हैं " जाने वह अब उठेगी या नहीं। "

४ : भूषण

कांगडावासी भूषण ने लाहौर कॉलेज से बी॰ ए॰ किया हैं। कॉलेज में ही वह मार्क्सवादी विचारों का समर्थक तथा पार्टीका प्रचारक बन गया था। "दर्शन शास्त्र" में एम॰ओ॰ करके प्रोफेसर बनने की तमन्ना रखनेवाला भूषण धनाभाव के कारण बैंक में क्लर्क बन जाता हैं। प्रथम महायुध्द में भारतीय सैनिकोंको युध्द में घसीटने का विरोधी होने के कारण वह नौकरी छोड देता हैं और पार्टी का क्रियाशील कार्यकर्ता बनकर कार्य करता रहता हैं।

अपने सहपाठी ब॰ सरोला के साथ होने से उसका परिचय मनोरमा से होता हैं। वह पक्का कम्युनिस्ट हैं। मनोरमा उच्च वर्गीय होने के कारण उसके सच्चे प्रेम का वह कई दिनों तक विश्वास नहीं करता। भद्र समाज पर उसका विश्वास नहीं हैं। भद्र समाजपर व्यंग्य करता हुआ वह कहता हैं, "वहाँ केवल भय हैं। उस व्यक्तिगत स-हृदयता के मूल में क्या हैं। समाज में सबकुछ अच्छा हैं, वह सब छीनकर तुम लोगो ने भद्र समाज की रचना की हैं। ---- भद्र श्रेणी के संपन्न गमलों मे सजा हुआ, स-हृदयता से महकता हुआ यह समाज

चाहे अपने आप मे कितना संतुष्ट हो परंतु समाज के लिए तो वह अन्याय ही हैं। " [१] प्रेम की व्दंदात्मक गति का वह समर्थक है, इसिलीए मनोरमा का प्रेम वह समझता नहीं।

भूषण मुँहफट और स्पष्ट वक्ता हैं। मनोरमा के साथ श्रेणी संघर्ष के बारे में वह इतना बे रोक टोक बोलता हैं कि मनोरमा भी दुखी हो जाती हैं। स्वयं की निर्धन श्रेणी और मनोरमा की धनिक श्रेणी में व्दंदात्मक संघर्ष अवश्यभावी हैं। इसपर उसका गहरा विश्वास होने के कारण मनोरमा के प्रेम का स्विकार करने में वह झिझकता रहता हैं।

भूषण सच्चा समाजसेवक हैं। समाज में कोई पीडित नजर आनेपर वह उसकी सहायता करनेके लिए आगे बढता हैं। धनसिंह सोमा को जब वह बेसहारा रूप में पाता हैं, तब मनोरमा के घरमें उन्हे काम भी दिलवाता हैं। भूषण स-हृदय भी हैं। वह सोना को सहारा देने केबारेमें अपने इस गुण का बुध्दिपूर्वक विवेचन भी करता हैं। "स-हृदयता जीवन की शोभा हैं। ------ तुम्हारे परिवार में उसको (सोमा) जगह मिल सकी क्यों कि न तुम अभाव से पीडित हो और न तुम्हारी स्थिति किसी को दो बातें कह देने से गिर सकती हैं।" [२] इस प्रकार उच्च स्तरीय आचार और विचारों के कारण वह विशुध्द बुध्दिवादी और तार्किक बन गया हैं।

वह प्रेमी हैं, परंतु प्रेम से बढकर पार्टी का कार्य समझता हैं। उसका प्रेम छिछला नहीं हैं। मार्क्सवाद के अनुसार उसकी प्रेम की व्याख्या इस प्रकार हैं, " और सब चीजों की तरह जीवन मे प्रेम की गति भी व्दंदात्मक हैं। प्रेम जीवन की सफलता और सहायता के लिए हैं। यदि प्रेम छिछला या शिथला रहे, तो वह असंयत वासना की गंध भी नजर नहीं आती बल्कि उसमें हमदर्दीपूर्ण सहाचर्य मात्र दीख पडता हैं।

---

१. मनुष्य के रूप : यशपाल : पृष्ठ ८१
२. मनुष्य के रूप : यशपाल : पृष्ठ ८५

यह सच्चा समाज सेवक उपन्यास के अंत में "सोमा" की रक्षा में एक गुण्डे के हाथ से आकस्मात मर जाता हैं। यशपाल ने उपन्यास का अंत उसकी मृत्यु से करके उसे अमर कर दिया हैं। उसका यह बलिदान हमारे लिए करुणा से सना एक नया समाजवादी संदेश दे देता हैं।

[६] अमिता १९५६

प्रस्तुत उपन्यास का एक भी प्रमुख पात्र लेखक के प्रगतिशील विचारोंका अनुगाती नहीं हैं। गांधीजी के अहिंसावाद की खिल्ली उडानेवाले यशपाल इस उपन्यास में "विश्व बंधु त्व" का संदेश देते हुअे नजर आते हैं। लेखक की भौतिकता, मार्क्सवादी विचारधारा तथा सामाजिक समानता के क्रांतीकारी विचार कहींपर भी नहीं दीख पडते।

थोडे मे यह उपन्यास ऐतिहासिक ठोस प्रसंगोपर लिखी गांधीवादी विचारोंकी आवृत्ति ही हैं। हमे इसके जन्मदाता यशपाल देखकर ही आश्चर्य लगता हैं।

प्रस्तुत उपन्यास के सभा पात्र - अमिता, महारानी, नन्दा सम्राट अशोक और अन्य पात्र गांधीवादी अहिंसा नीति और विश्वबंधु त्व की भावना से भरे दीख पडते हैं। इस उपन्यास की "अमिता" भी छ: वर्षीय बालिका होने के कारण समूचे उपन्यास की घटनाएँ बालिश ही लगती हैं। "अमिता" न किसी सामाजिक क्रांती का संदेश देती हैं न अशोक कालीन स्त्री का प्रतिनिधीत्व करती हैं।

प्रस्तुत उपन्यास के "हिता" और "मोद" ये दो दास पात्र ही बौध्द कालीन दासोंपर अभिजात वर्ग के व्दारा हुअ, अन्यायों का यथार्थ प्रकाशन करते हैं।

हिता और मोद

"दिव्या" की तरह प्रस्तुत उपन्यास में भी दास प्रथा के भयानक अभिशाप से ग्रस्त दास दासी के जीवन का यथार्थ वर्णन मिलता हैं। हिता और मोद ये पात्र गौण होकर भी लेखकके प्रगतिशील विचारों के प्रतिनिधि पात्र बन गये हैं।

हजारो वर्षो से दासपरिवार की परंपरा की शिकार हिता १] नारीकी व्यथा और २] बंधनो मे जकडी नारी की अवस्था को पेश करती हैं। हिता और मोद दोनो प्रेमी होकर भी अपने मालिक से पूछे बगैर एक दुसरे से खुलकर प्रेम भी नहीं कर सकते। मनुष्य जब किसी का ज त दास बन जाता हें तब उसकी स्वाभाविक भावनाओंका विकास नही होता। मनुष्य के जीवन में इससे बढकर भायानकता और कौन सी हो सकती हैं ?

अशोक के काल में दास उन्हे मिले उपहारों को भीस्विकृत कर लेने में स्वतंत्र नहीं थे। सेठी द्वारा प्राप्त कंगन हिता इसीलिए नहीं ले सकी कि, "राजाओं के योग्य भेंट दासियों को नहीं दी जाती " वह मोद से प्यार भी नहीं कर सकती क्यों कि वह दास हैं। प्रस्तुत उपन्यास में दास प्रथा के शोषण के बारे में टिपणणी करना सही यशपाल का प्रमुख उद्देश्य हैं। "दास दासी का मुल्य पशु की भांति उनके शरीर के मांस के तौल से निश्चित नही किया जाता। दास का मुल्य तो उनकी श्रम शक्ति या उसके कौशल चातुर्य से लाभ की संभावना से ही झांका जाता हैं। " [१] समा्ट अशोक के काल में समूची राजसत्ता दासोंके शोषण पर ही खडी नजर आती हैं। हिता और मोद के द्वारा लेखकने यही बात अत्यंत कुशलतासे स्पष्ट की हैं।

[७] झूठा-सच १· १९५८
२· १९६०

१ : जयदेव पुरी -

जयदेव पुरी स्कूल मास्टर राम लुभाया का लडका हैं। वह कालेजमें पढनेवाले छात्र के रुप में प्रथम सामने आता हैं। कथानक के प्रारंभ मे वह एक उद्योगशील स्वावलंबी एवं आदर्शवादी युवक के रुप में सामने आकर परिस्थितियों के साथ संघर्ष करता दिखाई देता हैं। १९४३ मे युध्दीवरोधी आदोंलन में सक्रीय रहने के कारण जेल जानेवाला यह युवक क्रांतीकारी

१· अमिता : यशपाल : पृष्ठ २६१

व्यक्तित्व लेकर उपस्थित होता हैं। उसके मन में एक ओर देशप्रेम तो दुसरी ओर परिवार को सुखी और संपन्न बनानेकी चिन्ता उसके व्यक्तित्व को अत्यंत पैना बना देती हैं।

जेल में "प्रोफेसर" का सपना देखनेवाला यह युवक जेल से छूटनेपर अपनी बेरोजगारी मिटानेके लिए अर्मिला जैसी अत्यंत चंचल और शोख मिजाज लडकी को टयुशन करने जाता हैं। प्रारंभमें एक गुरु की भूमिका को वह अत्यंत संयम से निबाहता हैं, परंतु अर्मिला के चुम्बन स्पर्श से उसका संयम चूर चूर हो जाता हैं और वह उसके प्रेमपाश मे बध्द होता हैं। उर्मिला के साथ स्थापित उसका संबंध जल्दही xहूहूx टूट जानेपर वह संतोष से कहता हैं, " मेरे लिए विवाह का मतलब केवल शारिरिक संबंध नहीं हैं । वह लडकी तो प्रबल शारीरीक आकर्षण के अतिरिक्त और कुछ हैं नही । कैसे गले पड गयी ? " [१] यहाँपर पुरी के चरित्रपर मानसिक संघर्षो से आर्थिक विपन्नताओं से और निर्वाह की कठिण चिन्ता से घिरे स्वयं यशपाल के प्रारंभिक जीवन की छाप ददख पडती हैं।

पुरी अत्यंत कुशाग्र बुध्दिवाला साहित्यिक हैं। पैरोकार, निशांत जैसे पत्रोमे प्रकाशित होनेवाली उसकी कहानियोंके लिए पाठक लालायित रहते है। वह कुशल अनुवादक भी हैं। उसकी इस प्रतिभा के कारण वह कनक जैसी संपन्न परिवारकी और सुन्दर युवती के संपर्क मे आता हैं। वह कनक को अपने अनुकूल मानता हैं, परंतु उसके -हदय में कनक के समृध्द समाज के प्रति हमेशा एक प्रकार की झिझक और हीन भावना रहती हैं। अपनी आर्थिक दीनता और कनक की आर्थिक संपन्नता का मेल कभी नहीं होगा यह सोचकर वह एक दिन कनक से स्पष्ट ही कहता हैं, "तुम इतनी स-हदय हो। तुम्हें धोखे मे रखनेका अपराध नहीं कर सकता। मैं धनी नहीं हूँ। अभी केवल एक सौ रुपये -मासिक की ही नौकरी हैं परंतु मुझे अपने सामर्थ्य और भविष्य पर विश्वास हैं।" [२]

---

१. झूठा सच भाग १ : यशपाल : २७
२. ----- " ---- : यशपाल : ४१

पुरी क्रांतीकारी विचारो का होने के कारण सांप्रदायिकता का जीव्र विरोध करता हैं। "पत्रकार" के रूप में वह सभीयोंका अग्रणी बन जाता हैं। चन्द टुकडोंके लिए अपने स्वतंत्र विचारोंका कत्ल करना उसे पसंन्द नहीं हैं। आत्मसंम्मान पर आंच आते ही वह "पैरोकार" से अलग हो जाता हैं। इस प्रकार वह अपने आदर्शोपर गहरी आस्था रखनेवाला संघर्षशील युवक होने के कारण ही कनक जैसी सौंदर्यखनी विदुषी को भी प्रभावित करता हैं। उसके इन्ही गुणोंपर मरती हुआी कनक उसे अपना जीवन साथी मान लेती हैं।

उपन्यास के प्रथम भाग मे प्रतिक्षण विकसित होनेवाला पुरी का यह चरित्र उपन्यास के दूसरे भाग में लगभग पतनोन्मुख ही हो जाता हैं। प्र थम भाग में ही पुरी की स्वार्थी वृत्ति और हीनता के दर्शन कराके यशपाल ने अत्यंत कलात्मकता से उसके इस दुसरे रूप का उद्घाटन किया हैं। अपना आत्मसंमान बनाये रखने के लिए वह झूठ बोलने से भी नहीं हिचकता। अपनी बहन तारा के विवाह के पुर्व आरंभ में तारा की तरफदारी करके अयोग्य वर का विरोध करनेवाला पुरी बादमें उसकी सहायता करने से मुंह मोडता हैं। इतना ही नहीं, वह तारापर अनेक लांछन लगाकर उसे अपमानित करता हैं।

जयदेव पुरी इस प्रकार अस्थिर विचारोंवाला आदर्शवादी युवक हैं। कनक के साथ विवाह का वादा करने के पश्चात जब हालात बदल जाते हैं तब जलनधर में उर्मिला के मिलनेपर उसे भी अपना लेता हैं। फिर कनक के अकस्मात मिलनेपर उसके साथ विवाह करता हैं और फिर एक बार उर्मिलाको बहलानेके लिए उससे भी विवाह के प्रस्ताव का छल करता रहता है। वह एक दुर्बल व्यक्ति हैं जो अपनी प्रतिष्ठा के लोभ में बुराईयो और दुर्बलताओं की खाई मे गिर पडता हैं। उपन्यास के अंत तक वह क्षणिक मोह, स्वार्थ और राजनीतिक आकांक्षा के माया जाल मे फंसा बेचैन ही दीख पडता हैं। कनक और उर्मिला के प्रति, की जालसाजी के कारण वह मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सचमुच ही "प्रेमरोगी"

दीख पड़ता हैं। परिणाम यह होता हैं कि जो कनक उसके कंधे से कंधा मिलाकर दिनरात प्रेस का कार्य करती हैं, उसके साथ उसका संबंध विच्छेद हो जाता हैं। उर्मिला को कुमारी माता के रूप में असहाय छोड़नेवाला पुरी निस्संदेह ही पाठकों के द्वेश का भागी बन जाता हैं।

उपन्यास के अंत में उसके चरित्र की गिरावट देखकर तो पाठक दंग हो जाते हैं। शादी के पहले सोमराज का विरोध करनेवाला पुरी उसका समर्थन करता हुआ दीख पड़ता है। सुख प्राप्ति के लिए सूद की कठपुतली बन वह अपने बहन के विरोध में कोर्ट में भी चुनौती देता हैं। अदालत जब तारा प्राणनाथ को निर्दोष मान छोड़ देती हैं तब पुरी का चरित्र इतना गिर जाता हैं कि वहा से फिर उभरना असंभव सा लगता हैं।

यशपाल ने अत्यंत तटस्थता से इस नायक का चित्रण किया हैं। उसके चरित्र का संघर्ष मनोवैज्ञानिक हैं। पुरी के चारित्रिक पतन को ध्यान मे रखकर कुछ समीक्षक पुरी को नायक नहीं मानते। परंतु उपन्यास की सभी घटनाओंका केंद्र पुरी होने के कारण उसे ही उपन्यास का नायक मानना समीचीन लगता है। इस उपन्यास में उसका चरित्र राजनीतिक परिवेश। में दोलायमान रहनेवाले मध्यमवर्गीय का चरित्र हैं। अपने स्वत्व की रक्षा के लिए "पैरोकार" की नौकरी छोड़नेवाला क्रांतिकारी पुरी राजनीति के कारण सूद जैसे स्वार्थी नेता के साथ अत्यंत पतित बन जाता हैं। पुरी का प्रारंभिक क्रांतिकारी स्वरूप और उसकी समाजवाद के प्रति आस्था देखकर ही हम उसे यशपाल का पतनोन्मुख। क्रांतिकारी नायक कहे तो कुछ अतिशयोक्ती नहीं होगी।

२ : डॉ॰ प्राणनाथ

झूठा - सच का डॉ॰ प्राणनाथ पाठकोंका अत्यंत आदरणीय पात्र रहा है। लाहौर स्थित सेठ गोपालदास का यह पोता हैं। धनिक वर्गका होकर भी वह उच्च विद्या विभूषित हैं। अर्थशास्त्र। का पी॰एच॰डी॰ होकर भी वह स्वभाव से अत्यंत विनम्र तथा दयालु हैं। पंजाब विश्व-विद्यालयका एक विच्क्षण अधिव्याख्याता के रूप में डॉ॰ प्राणनाथ मशहूर

हैं। डॉ० प्राणनाथ विचारो से मार्क्सवादी और उग्र परिवर्तन का समर्थक हैं। धनिक का पोता होकर भी मार्क्सवादी विचारों का होने के कारण वह अपने घरमें अलग कमरे में अत्यंत सीधा सादा जीवन जीता हैं।

तारा के पिता ने बचपन में उसे पढाया था। बडा होकर भी प्रथम उसके पिता को प्रणाम करने के लिए तारा के घर जाता है हैं। डॉ० प्राणनाथ का स्वभाव अत्यंत उदार हैं। गरीबों के प्रति दयाभाव उसके स्वभाव का महत्व पूर्ण पहलू हैं। तारा की गरीबी मे उसे टयुशन दिलवाकर उसकी आर्थीक विपन्नता में वह अप्रत्यक्ष रुप से सहायता ही करता हैं।

स्त्री पुरुष प्रेम के प्रति उसका दृष्टिकोन वासनात्मक नहीं हैं। तारा को चाहकर भी वह अपने को नियंत्रण में रखता हैं। जब लोग फब्तियाँ कसने लगते हैं, तब वह उसे तीन महिनों की तनख्वाह देकर अपने घर आने के लिए मना कर देता हैं। विवाह का मतलब केवल सैक्स न होकर दो दिलो का एक होना हैं, यह बात वह इन शब्दों मे तारा से स्पष्ट रुप से बताता हैं, "तुम्हारी आयु उन्नीस है मेरी तीस हैं। ये स्त्रियाँ यह नही सोचती कि उन्नीस साल की लडकी तीस बरस के अधेड से क्यों ब्याह करेगी। -------- ये स्त्रियाँ यह भी अनुमान नहीं कर सकती कि मैं तुम्हे सैक्स [यौन विचार] के बिना भी लाईक [पसन्द] कर सकता हूँ। [१]

तारा के विवाह के बाद भी वह उससे मिलता हैं, परंतु अत्यंत संयम से एक मित्र समझकर ही। इस प्रकार तारा और डॉ० प्राण का विचारों का आदान प्रदान शादी पूर्व ही हो चुका हैं।

देश विभाजन के पश्चात डॉ० प्राण प्लॅनिंग कमिशन के औद्योगिक विभाग का परामर्शदाता बन जाता हैं। अचानक उसकी तारा

---

१० झूठा सच : प्रथम भाग : यशपाल : पृष्ठ ६२

से भेट हो जाती हैं। उस वक्त तारा भी स्माल स्केल इंडस्ट्रीज वीमेन सेक्शन में अंडर सेक्रेटरी के पदपर काम कर रही हैं। तारा की रामकहानी सुनकर और उसे गुप्त रोग से पीडित जानकर भी उसे पत्नी के रूप में स्वीकृत करनेवाला डॉ॰ प्राण सचमुच अत्यंत अत्यंत उदार व्यक्तित्ववाला पात्र दीख पडता हैं। उसका इलाज करने के लिए वह कहता हैं, "तुम न चाहो तो मेरे साथ कभी न रहना पर जबतक तुम्हारा इलाज नही हो जाता तुम मिसेज नाथ हो। यहाँ इलाज करने में संकोच हैं तो बम्बई में व्यवस्था हो सकती हैं। वहाँ भी नही चाहती तो मैं तुम्हे इग्लैंड ले जा सकता हूँ, वियाना ले जा सकता हूँ। इसी धाज से ही तुम मिसेज नाथ हो।" [१]

डॉ॰ प्राणके चरित्र के व्दारा यशपाल के नारी संबंधी विचार प्रकट होते हैं। नारी को समान अधिकार देनेके पक्ष में खडा डॉ॰ प्राण, यशपाल के साम्यवादी विचारोंका एक प्रतिनिधि पात्र हैं।

उपन्यास के अंत मे देशकी सामान्य जनता पर विश्वास करनेवाला डॉ॰ प्राण सूद की अप्रत्यतशित हार पर कहता हैं " गिल अब तो विश्वास करोगे जनता निर्जीव नहीं हैं। जनता सदा मूक भी नहीं रहती। देश का भविष्य नेताओं और मंत्रियो की मुठठी में नहीं हैं, देश की जनता के ही हाथमें हैं।" [२] डॉ॰ प्राण के इस कथन के व्दारा यशपाल ने यह संभावना व्यक्त की हैं कि भविष्यत में कांग्रेस का राज्य चला जायेगा और देश की सामान्य जनता का राज्य आयेगा। सामाजिक क्रांती अब दूर नहीं हैं।

३ : तारा :

तारा झूठा सच की सब से प्रभाव शाली पात्र बन गयी हैं। वह मास्टर राम लुभाया की बेटी और नायक जयदेव पुरी की बहन हैं।

१· झूठा सच व्दितीय भाग : यशपाल :३८६
२· झूठा सच व्दितीय भाग: यशपाल :४०८

घर परिवार पुराने संस्कारों का होने के कारण एक जयदेव के अलावा कॉलेज शिक्षा पढनेके लिए सभी उसका विरोध करते हैं। केवल जयदेव के आग्रहपर ही वह बी॰ ऐ॰ पढ रही हैं।

तारा प्रगतिशील विचारोंवाली युवती हैं। घरकी के कुण्ठाग्रस्त वातावरण से मुक्त होने के लिए वह कॉलेज के अन्मुक्त वातावरण में सक्रीय भाग लेती हैं। वह अपनी मर्जी के बगैर अपने से हीन पुरुष के साथ विवाहबध्द होना नहीं चाहती। वह स्वभावसे ही गंभीर और दृढ प्रतिज्ञ हैं। स्वभाव से दृढ होकर भी उसे परिवारवालों की पिछडी मान्यताओं के आगे झुकना पडता हैं और सोमराज जैसे बदचलन व्यक्ति के साथ विवाह बध्द होना पडता हैं। पहली सुहागरात को ही सोमराज उसकी बुरी तरह पिटाई करता हैं। अपने आत्मसंमान पर लगी ठेंस तारा कभी बर्दाश्त नहीं करती। वह अपनी ससुराल से भाग जाती हैं।

सांप्रदाईक दंगो के कारण बिगडी परिस्थिति में अपनी रक्षा के लिए भागनेवाली हतभागिनी तारा नब्बू नामक गुण्डे के कब्जे मे आ जाती हैं। यहॉपर भी वह असहाय अबला बनकर नही रहती। न नब्बू के सामने वह आत्मसमर्पण नहीं करती। वह सबला बनकर अत्यंत साहस से काम लेती हैं। वह कभी भी अपनी बौध्दिक चेतना को नष्ट होने नहीं देती। हफिज मियॉका मुस्लीम धर्म स्विकारनेका आग्रह उसके स्वाभिमानी मनेको अच्छा नही लगता। अत्यंत साहससे हिन्दू मुस्लिम दंगोकी भयानक आग में वह अपने को झॉक देती हैं। ऐसी स्थिति में भी वह साहस और बुध्दिसे काम लेती हैं।

भारत विभाजन के पश्चात तारा के चरित्र में विकास का नया मोड आता हैं। वह जीवन में आये कटु अनुभवों के कारण स्वावलंबी जीवन जीना प्रारंभ करती हैं। वह "स्माल स्केल इंडस्ट्रीज" विमेन सेक्शन मे अंडर सेक्रेटरी के पदपर कार्य करती हैं। वह आत्म विश्वासी, प्रगतिशील विचारों की और आत्म निर्भर नारी हैं। अपनी बहन शीलो को उसके विवाह के बाद भी उसके [शीलो] प्रथम प्रेमी रतन से मिलवानेका उसका कार्य मानवीय स-हृदयता का सुन्दर उदाहरण हैं।

तारा स्वभाव से विनम्र और आदर्शवादी हैं। उँचे सरकारी पदपर आसीन होकर भी उसमें झूठी शान दिखानेका शौक नहीं हैं। वह मोटरो के बजाय पैदल ही घूमकर असाहाय स्त्रियोंकी सहायता करती रहती हैं।

प्रेम और विवाह के बारेमें उसके विचार शुध्द मार्क्सवादी हैं डॉ• प्राणनाथ को अपने पूर्व जीवन के बारेमें तथा गुप्त रोग के बारे मे परिचित कराना वह अपना परम कर्तव्य समझती हैं। अंत मे वह डॉ• प्राणनाथ के साथ विवाह भी करती हैं। विवाह में दो दिलोंका मिलन होना चाहिए, ऐसा उसका स्पष्ट मत हैं। डॉ• प्राणनाथ उससे ग्यारह वर्ष बड़े होकर भी वह उसके पवित्र प्रेम निमंत्रण का सानंद स्विकार करती हैं।

इस प्रकार यशपाल ने अपने नारी विषयक मार्क्सवादी विचारों से भरा तारा का सगठित निर्माण किया है। उपन्यास का पूर्वार्ध मध्यम वर्ग की प्रतिनिधि पात्र तारा पर आयी कठिण परिस्थितियों का चित्रण करने में और उत्तरार्ध इसी तारा के प्रगतिशिल रुप का चित्रण करनेमे व्यतीत किया हैं। उपन्यास के अतिविशाल कथापट पर विकासमान होनेवाला तारा का चरित्र मध्यम वर्ग की ऐसी नारी का प्रतिनिधित्व करता हैं जो आदर्श पूर्वक होने के साथ साथ प्रगतिवादी भी हैं। बलात्कार और अत्याचारोंको सहती हुअी भी तारा अपने जीवन को अध:पतित नहीं समझती। परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाकर अत्यंत स्वाभिमान और स्वतंत्र रीति से अपना जीवन यापन करती हैं। इस प्रकार वह एक मार्क्सवादी नारी का आदर्श हैं।

४ : कनक

कनक पंडित गिरिधारीलाल जैसे उच्च वर्गीय सेठ की कन्या हैं। उच्च वर्गीय होकर भी वह आधुनिक और स्वतंत्र विचारोवाली लड़की हैं वह एम• अे• की छात्रा हैं। १९४२ के राजनीतिक आंदोलन मे वह स्टूडंटस कांग्रेस की महत्वपूर्ण मेंबर बनकर जुलूसोंमें भाग लेती हुअी दीख

पढ़ती हैं। खद्दर की साड़ी पहनना और देशकार्य में हिस्सा लेना उस वक्त उसके जीवन का प्रमुख कार्य था।

उसके साहित्य में खास करके राजनीतिक साहित्य पढने में बहुंत रुचि थी। "पैरोकार" के लेख पढकर ही वह पुरी की ओर आकृष्ट हुवी। पुरी की घर की स्थिती जानकर भी उसने उसका साथ नहीं छोडा। पुरी को आर्थिक सहायता दिलवाने के लिए अपने घर में टयूशन दिलवा देना उसके दयार्द्र -हृदय काही परिचायक हैं।

कनक इतनी सुन्दर तो नहीं है, परंतु उसमें अपने ढंग का आकर्षण जरूर हैं। वह जयदेव पुरी को -हृदय से चाहनेवाली आदर्श प्रेमिका हैं। पुरी के विरोध में बोलनेवाले अपने बहनोई नैयर से वह बात तक करना नहीं चाहती। प्रारंभ मे अपने प्रियकर से एक क्षण का विरहभी उसे बर्दाश्त नही होता था। पुरी को वह शरद और गोर्की जैसा महान साहित्यीक तक समझती हैं।

घरकी सुस्थिति, उसके दयाभाव पर कभी हावी नहीं होती। भालापांधे की गली मे जब आग लगती हैं, तब वह अकेली उस गली में जाती हैं। उसके जाने के पीछे उसका पुरी के प्रति प्रेम अवश्य अहैं। परंतु उसका दयाभावी अंत:करण भी हैं।

पुरी के साथ शादी होते ही कनक की मानसिक यंत्रणाएँ और उसके जीवन की शोकान्तिका प्रारंभ होती हैं। विभाजन के पश्चात अपने पति के कंधे से कंधा लगाकर दिनरात प्रेस का कार्य करनेवाली पुरी की आदर्श प्रेमिका उसका चिडचिडा व्यवहार देखकर घायल हो जाती हैं। जिस पुरी के लिए वह " शकुन्तला" बन गयी थी, उस पुरी के चरित्रिक अध:पतन को देखकर वह सुन्न सी रहती हैं। पुरी उसकी शारीरिक प्यास बुझाने में असमर्थ है, वह उसे पहले जैसा नहीं चाहता। एक स्वतंत्र विचारोवाली प्रगतिशील नारी के लिए ये सभी असहनीय हैं। अत्यंत धीरज के साथ वह पुरी से संबंध विच्छेद करके अपना स्वतंत्र जीवन शुरू करल देती हैं।

SARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

कनक केवल बाहयडंबर पर ही विश्वास नहीं करती । पुरी से अलग होनेपर वह गिल के विचारों से प्रभावित होती हैं, और अपनी छोटी लड़की के साथ वह गिल के साथ जीवन यापन करती हैं। कनक ने यहांपर किसी एक की बनकर परावलंबी पशु जैसे रहने के अलावा स्त्री को अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखकर इस पुरुष प्रधान मान्यता का विरोध करना चाहिए यह समाजवादी विचार अपने आचरण से हमारे सम्मुख रखा हैं।

यशपाल कनक को ही उपन्यास की नायिका मानते हैं। कनक में अंतर्विरोधी मानसिक संघर्ष तारा की अपेक्षा अधिक हैं। वह एक सचेत आत्मसंमानयुक्त आधुनिक नारी हैं। कनक ही यशपाल के विचारो की प्रत्यक्ष वाहिका के रूप में सामने आती हैं। इस दृष्टि से कनक ही उपन्यास की नायिका हैं।

५ - प्रीतमसिंग गिल -

उपन्यास के दूसरे भाग में गिल उपस्थित होता हैं। वह कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य था। वह लम्बे केश दाढी बढ़ाकर और मूछें रखता था , जिनको अपनी प्रेमिका सरस्वती के कहनेसे सफाचट कर दिया था। उस के परिणाम स्वरूप उसे पार्टी से निकाल दिया जाता हैं। सांप्रदायिक दंगोंमे वह अपनी प्रेमिका सरस्वती से बिछुड़ जाता है। वह अकेला ही लखनऊ में प्रूफ रीडरी का कार्य करता हैं। उसका परिचय यहीं लखनऊ मे कनक से होता है। नौकरी की तलाश में कनक और गिल दोनो भी लखनऊ उर्दु पोस्ट के लिए गये थे। कनक के लिए गिल अपनी मुलाकात छोड़ देता हैं गिल के मनकी यह विशालता और स-हृदयता देखकर उसके प्रति कनक के मन में आकर्षण और हमदर्दी की भावना पैदा होती हैं। जिसका रूपांतर दोनो कें विवाह मिलन में होता हैं।

गिल जयदेव पुरी का सच्चा मित्र हैं। पुरी और कनक के बीच का मनमुटाव मिटानेकी वह भरसक कोशिश करता हैं। पुरी के चुनाव के

समय उसके विरोधी विचारोंवाला होकर भी वह केवल मित्रता को निभानेके लिए "नाजिए" पत्र में पुरी के समर्थन में लेख लिखता हैं।

गिल प क्का कम्युनिस्ट हैं। उसकी रानैतिक विचारधारा नौकर शाही और सामृा ज्यशाही के विरूद्द हैं। वह प्रधान मंत्री के• बारेमें कहता हैं " प्रधान मंत्री की आँखो मे खुशामद के घी की सलाई लगा दीजिए उन्हे कुछ नही दिखाई देगा। उन्हे जो कुछ आप कहेंगे उसपर विश्वास करना होगा। नौकरशाही का तो गुरुमंत्र यही है, अपने से ऊपर का अप सर संतुष्ट रहना चाहिए। " [१]

६ -_असद_-

झूठा सच उपन्यास के कथानक में कम्युनिस्ट विचारधारा के प्रतिनिधि पुरुष पात्र के रूप में असद का स्थान बहुत ही ऊँचा हैं। वह विद्या र्थी जीवन से ही सभा सोसाइटियोमें भाग लेता रहता हैं। दयालसिंह कॉलेज के स्टूडेंटस फेडरेशन का वह सक्रीय और कर्मठ सदस्य है।

असद जाति से मुसलमान हैं, परंतु सांप्रदायिकता का घोर विरोधी हैं। सांप्रदायिक नांव पर आधारित मुस्लीम लीग का इसीलिए वह विरोध करता हैं। वह हिन्दू मुसलमानोंके भाई चारे को महत्व देता हैं। देशके विभाजन का विरोध करता हुआ एक जगह वह कहता है " हम मुल्क के बँटवारे का विरोध करते हैं।" पाकिस्तान का मतलब क्या हैं ? हिन्दुस्तान के सूबे में कांग्रेसी की मिनिस्ट्री है तो दुसरे में लीग मिनिस्ट्री हो सकती हैं। यही खुद मुख्तियारी हैं।[२]

असद देश प्रेमी हैं। वह व्यक्तिगत प्रेम और सुख की अपेक्षा देश हित और देश प्रेम को अधिक महत्त्व देता हैं।

प्रेम के क्षेत्र में असद के विचार प्रगतिशील हैं। हिन्दू मुसलमान, सिख ईसाई आदि वर्ण तथा धर्म भेद वह नही मानता। वह हिन्दू युवती तारा से प्रेम करता हैं, परंतु प्रेम की भावुकता में कभी बहता हुआ नजर नहीं आता।

१• झूठा सच दूसरा भाग : यशपाल : ३७९
२• झूठा सच प्रथम भाग : यशपाल : पृष्ठ

असद सच्चा कम्युनिस्ट हैं। घर से भागकर आयी और सर्वस्व समर्पण करनेवाली तारा को केवल पार्टी के अनुशासन के कारण ही वह छोड़ देता हैं। वह पाकिस्तान में रहकर भी कम्युनिस्ट सिध्दांतों का प्रचार करता हैं। वह लीग का विरोधी होने के कारण जेल भी जाता हैं।

इस प्रकार असद यशपाल के विचारों वाला कर्मठ कम्युनिस्ट पात्र हैं। मुसलमान होकर भी लीग का विरोध करनेवाला, सांप्रदायिकता के विरोध में जुलूस निकालनेवाला स्वतंत्र विचारोंवाला असद कथानक का प्रमुख प्रगतिशील पात्र बन गया हैं।

बारह घण्टे - १९६२

१ : बिनी :

इस लघु उपन्यास की नायिका "बिनी" एक विधवा ईसाई नारी हैं अपने पति "रोजी नेपियर" की मृत्यु से उसका मन शून्य हो गया हैं। बिनी का मनोवैज्ञानिक चित्रण ही उपन्यासकार का मुल लक्ष्य हैं। अपने पति के वियोग में वह मौन रहकर जैसे तैसे जीवन यापन करती हैं।

एक दिन वह अपने पति की समाधि के दर्शन के लिए जाती हैं। तब उसका परिचय विजय फैंटम से होता हैं। दोनो हमदर्द के तार जुड़ जाते हैं। फैण्टम को अपनी पत्नी के विरह से मुक्ति देने के उदात्त विचार से बिनी अपना दु:ख परे रखकर उसको सहारा देती हैं। इस प्रकार बिनी उदार-हृदया और त्यागी नारी हैं।

बिनी विवेकशील और स्वतंत्र नारी हैं। वह अपनी मौसेरी बहन जेनी पामर के घर कुछ समय के लिए आती हैं, परंतु उसपर अपना बोझ डालना अथवा अपने दुख से उसे दुखी बनाना उसे पसन्द नहीं हैं। अपनी एक लड़की "रोमा" के होते हुये भी वह अपने एकाकी जीवन में फैण्टम जैसे समदु:खी प्रेमपात्र का सहारा चाहती हैं। लेखकने बिनी के मानसिक परिवर्तन के जरिए विवाह और प्रेम के प्रश्न को उठाया हैं।

बिनी का प्रेम अनैतिक नहीं हैं, यह बताते समय लेखक कहते हैं "प्रेम जीवन की माँग होती है और प्रेम पात्र उस माँग को पूरा करता हैं, प्रेम पात्र कोई भी व्यक्ति हो सकता हैं। प्रेम पात्र या व्यक्ति प्रेम का उन्मेष पूरा कर सकने के कारण ही अच्छा या प्यारा लगता हैं।" [१]

इस प्रकार इस लघु उपन्यास की नायिका बिनी समाजको विधवा औरतो का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो अपने भविष्यत के बारे में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सदा कुण्ठग्रस्त ही रहती है। फैण्टम के साथ विवाह बध्द होनेका बिनी का विचार लेखक अनैतिक स्खलन नहीं मानता। ऐसी कुण्ठाग्रस्त विधवाओंको बिनी का आदर्श लेकर अपना जीवन फिर नये सिरे से शुरु करना चाहिए यही महत्वपूर्ण संदेश लेखक ने दिया हैं।

२ - लॉरेन्स -

"बारह घण्टे" का लॉरेन्स व्यवसाय से एक पुलिस अफसर है परंतु उपन्यास में वह मार्क्सवादी विचारोंका प्रचारक ही दीख पड़ता है। विवाह और प्रेम पर विशुध्द मार्क्सवादी दृष्टि से चिन्तन करके प्रगतिशील विचारों के लम्बे व्याख्यान देता हुआ लॉरेन्स यशपाल के विचारों का वाहक बनकर सामने आता हैं। उपन्यास में लॉरेन्स की स्वतंत्र सत्ता इसीलिए ही नहीं दीख पड़ती। बिनी के परिवर्तन को अनैतिक सखलन न मानता हुआ वह उसकी तरफदारी और समर्थन करके उसे सच्चा सामाजिक न्याय दिलवाता हैं। इस दृष्टिसे लॉरेन्स एक गतिशील और जीवित पात्र लगता हैं।

३ - फैण्टम -

एक अध्यापक आगरा शहर का निवासी हैं। अपनी मासिक आमदनीपर मुश्किल से गुजारा करनेवाला यह अध्यापक अपनी "शैली" नामक मृत प्रियतमा के विरह में अपने जीवन का घोर स्मशान बनाए विरह के आँसू ढालनेवाला मजनू ही दीख पड़ता है। उपन्यास का नायक

१• बारह घण्टे: यशपाल :पृष्ठ १०१

बेकार भी यह पात्र बिल्कुल जड़, परंपरावादी और अंजान सा लगता हैं।

"बीनी" एक स्त्री होकर भी अपना दुख भूलकर इस बेचारेका दु:ख दूर करने के विचार से जब उसके प्रति प्रेम दिखाती हैं, तब कहीं फेंटम अपनी मानसिक दुर्बलता को झाड कर जीवन के प्रति आशावान बनता हैं।

"फैन्टम" की यह मध्यवर्गीय दुर्बलता का चित्रण ही फेंटम के चरित्र की विशेषता हैं। इसलिए उपन्यास में प्रगतिशीलता के प्रति बढनेवाले पात्र के अलावा मार्क्सवादी दृष्टिकोन में इस चरित्र का कोई मुल्य नहीं हैं।

९ - अप्सरा का श्राप १९६५

१ : अप्सरा मेनका -

दुश्यन्त शकुन्तलाख्यान की पौराणिक कथापर आधारित "अप्सरा का श्राप" उपन्यास की "मेनका" यशपाल के प्रगतिशील विचारों की वाहिका के रूप में नजर आती हैं वह देवलोक की प्रधान अप्सरा है। लावण्यवती हैं। अपने स्वर्गीय लावण्य से वह विश्वामित्र जैसे तपी को भी तपभ्रष्ट बना देता हैं। मेनका, शकुन्तला की माँ हैं।

प्रेम से अपने कर्तव्य को अधिक महत्व देनेवाली मेनका, शकुन्तला को निगरानी के लिए सानुमति के पास छोडकर स्वयं देवों की सेवा के लिए स्वर्ग जाती हैं, परंतु उसका ध्यान हमेशा शकुन्तला के भविष्यत की ओर ही रहता हैं।

एक आदर्श माँ होकर भी पुरुष द्वारा नारी के शोषण का वह विरोध करती हुई दीख पडती हैं। जब दुश्यंत अपनी पत्नी शकुन्तला को पहचान नहीं पाता तब ऐसे छली पति का साथ न देने के लिए वह अपनी बेटी से कहती हैं। यहाँपर वह पुराग्रही नहीं हैं। अपनी बेटी को उसके मतानुसार विचरनेका मौका भी वह देती हैं। इस प्रकार

मेनका के स्वर्गीय रूप से उसका मानवी स्वभाववाला रूप अधिक प्रभावशाली दीख पडता हैं।

२ - शकुन्तला -

विश्वामित्र और अप्सरा मेनका के प्रेम मीलन से उत्पन्न शकुन्तला में स्वर्गीय गुणों से अधिक मानवीय गुण ही दीख पड़ते हैं। शकुन्तला सुन्दरी और आज्ञाकारिणी हैं। अपने माता पिता की आज्ञा से ही वह राजा दुश्यन्त के विवाह प्रस्ताव को स्वीकृत करती हैं।

शकुन्तला एक स्वाभिमानिनी नारी हैं। पति व्दारा प्रताडित होनेपर वह वापस आश्रम जाना पसन्द न करके किन्नरियों के देश जाती हैं। शकुन्तला इस प्रकार आत्म निर्भर है परंतु वह सत्याचरणी और आत्म विश्वासी भी हैं। अपनी माँ के कहनेपर भी वह पति के साथ विद्रोह करके उससे अलग नहीं होती। वह स्वाभिमानी हैं, परंतु अहंकारी नहीं।

राजा दुश्यन्त जब उसके सामने नतमस्तक होता हैं, तब वह भी उसे मुआफ कर देती हैं। यहाँपर उसके स्वभाव की उदारता एवं विशालता दिख पडती हैं। राजा दुश्यन्त के पीछे जाने के लिए उसकी माँ विरोध करती हैं, परंतु वह स्वयं निर्णय लेकर दुश्यन्त की अनुगामिनी बन जाती हैं। यहाँपर वह आत्मनिर्भरता का परिचय देती हैं।

इस प्रकार शकुन्तला को लेखकने प्रगतिवाद की ओर अंजानेमें बढनेवाले पात्र के रूप में चित्रित किया है।

१० : क्यों फँसे -

प्रस्तुत उपन्यास के सभी पात्र स्वैर यौन संबंध अथवा फ्री सोसायटी के समर्थक से लगते हैं। स्वैर यौन संबंध के बारे में लेखक के आधुनिक विचार ही इन पात्रों के चरित्र चित्रण व्दारा स्पष्ट हुए हैं।

१ - भास्कर - भास्कर, लुधियाना के व्यापारी के घर पैदा हुआ २८ वर्षीय जवान हैं। वह अर्थशास्त्र का एम• ए• हैं। पत्रकारिता का डिप्लोमा पास

हैं और सरकारी प्रकाशन विभाग में नौकरी पाकर अपने पैरोंपर खड़ा हैं।

भास्कर अत्यंत खुष मिजाजवाला रंगीला रतन हैं। विवाह को वह बंधन समझता हैं। विवाह के बारेमें उसके विचार बिल्कुल आधुनिक है। उसका मत हैं कि एक दो साक्षात्कार में व्यक्ति के कद, रूप, रंग, कंठ के अतिरिक्त और कुछ भी नही जाना जा सकता हैं। इस प्रकार विवाह में लडकी देखन और तत्सम परंपरागत मान्यताओंका वह तीव्र विरोध करता हैं। विवाह के बारे में उसकी जो मान्यता हैं, उससे वह चिपका होनेके कारण माँ बाप के चाहनेपर भी वह शादी का नाम्तक नहे लेता। अपने चिनान के प्रति उसकी निष्ठा गहरीहै। उसका विचार हैं किसी लडकी युवती को जाने पहचानने बिना जीवनभर के साथ का बन्धन गले में डाल लेने का साहस नहीं। और उसमें क्या तुक? यह प्रेम का साथ नहीं, बंधन का साथ मात्र होगा। " [१]

अपने इस आधुनिक सिध्दान्तपर वह बना रहता हैं, लेकिन अपनी शारिरीक भूख मिटाने के लिए वह कई स्त्रियों के शरीर सुख का आदी होता हैं। मामी, मोजी, डॉ• मिस तथा हेना जैसी युवतियों के साथ उसके सहज शरीर संबंध ही रहे हैं। ऐसा लगता हैं, वह मनोविकृत रुग्ण हैं।

भास्कर को ऐसे स्त्री संबंधो की आदत उसकी मामीने ही लगाई थी। इस प्रथम संबंध मे मामी की उफनती आग और भास्कर की अन-नुभवी जवानी के वासनात्मक खेल मे भास्कर के आधुनिक विचार अपनी कुण्ठा को छिपाने के लिए ही होंगे ऐसा लगता है।

स्त्री संबंधो का आभ्यास भास्कर जहाँ कही भी जाता हैं, जो भी जवान स्त्री देखता हैं उसे आगोशमे लेने को ललचाता हैं। शादी शुदा मोती के साथ उसके संबंध प्रेम के कारण नही वासनापूर्ति के कारण ही आते हैं। मोती के साथ साथ वह हेमा के साथ भी हमबिस्तर होना भी वह अपराध महसूस नहीं करता। स्त्री को एक ही पुरुष की

१• क्यो पँसे : यशपाल : पृष्ठ ८७

बनकर रहनेकी पुरुषी वृ‍ि‍ का वह हमेशा धिक्कार करता हैं।

एक ओर वह वासनासे पागल हैं परंतु दूसरी ओर पैसे देकर यौन तुष्टि उसे मंजूर नहीं हैं। पुनैया के कहनेपर मिली मोना वेश्या का वह मनसे धिक्कार करता हैं, क्योंकि वह प्यास पैसे का नहीं मन का चाहता हैं। उसका कहना हैं, "प्यार के संतोष के लिए शरीरोंका ही नहीं मनका मेल भी चाहिए। किराए की रण्डी छोकरी से हाजत रफाई को प्यार का सन्तोष नही कहा जा सकता।" [१]

मसूरी मे हेना जैसी कॉलगर्ल के साथ मिले संभोग सुख मे उसे सब से अधिक आनंद आता हैं। कारण एक मात्र है कि उसके प्रेम आकर्षण और समर्पण मे स्वामित्व की इच्छा नहीं थी, था तो सिर्फ आत्मसंतोष के लिए समर्पण। परंतु ऐसा मसझना भास्कर का एक स्वप्न मात्र ही हैं क्यो कि होटल मे आनेवाली और विस्की की नशर मे झट समर्पण करने वाले युवती आभ्यस्त कॉलगर्ल के सिवा और कौन हो सकती हैं।

इस प्रकार यशपाल के प्रगतिशील यौन विचारों से भरा यह युवक अत्यंत अधुरा, चंचल और विषयासक्त हैं। मार्क्सवाद के मुक्त समाज के विचारों के पीछे अपनी प्यास बुझानेवाला वह एक मनोरंजण ही हैं।

२] पुनैय्या

"पुनैया" इस उपन्यास का गौण पात्र होकर भी लेखक के विचारोंका एकमात्र प्रबल प्रवक्ता हैं। पूनैया भास्कर का प्रौढ मित्र हैं। भास्कर उसे अपनी लाईन का गुरू मानता हैं।

पूनैया अत्यंत खुष मिजाज, शौकीन और आजाद जिन्दगी का चहैता है। प्रेम, विवाह और इश्क के बारे में उसके विचार प्रगति शील हैं।

सुंदरनगर की "पम्मी" वेश्या के घर में भास्कर के दिलबहलाव के लिए मंगाई "मोना" काल गर्ल की तथा अन्य वेश्याओंकी जब भास्कर

---

१. क्यों पैसे : यश पाल : पृष्ठ ७६

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

निन्दा करता हैं तब पुनैया वेशाओंकी तरफदारी करता रहता हैं। वेश्या की रण्डी नाम से संभावना करनेपर वह तडाक से कहता हैं, "स्साले हम तुम रण्ड ी नहीं है ? हम तुम अपने दिमाग और हाथ का किराया हजार डेढ हजार मासिक लेले, राजदूतावासोंसे विस्की के पूरे केस के केस गटक जाएँ तो सम्मानित ईमानदार और बुध्दिजीवी औरत घण्टे दो घण्टेके लिए अपनी कमर का किराया ले तो रण्डी। घृणा की पात्र।"

प्यार भक्ती और आत्मसमपर्ण के बारे में उसके विचार बिल्कुल आधुनिक और यथार्थ हैं। पुरुष और स्त्री को अपनी रुचि के अनुसार परस्पर को रति सुख का मुक्त आनंद देना चाहिए यह उसका मत हैं। शादी करके एक दुसरे के बंधन मे जीवनभर रहने का पुनैया सख्त विरोध करता है।

नारी को आर्थिक रूप से आत्म निर्भर रहने के लिए पुरुषों को पति मानकर नहीं चलना चाहिए। इसीलिए उसे बच्चो के झंझट से भी बचते रहना चाहिए। रति संबंध मे ये बच्चे स्त्री पुरुषोंके संबंध स्थायी बना देते हैं। इससे बचने के लिए परिवार नियोजन के साधनोंका इस्तेमाल स्त्रियों को करना चाहिए। पूनैया ये विचार केवल बताए नही देता बल्कि स्वयं नसबन्दी करवाकर दूसरों के सामने अच्छा उदाहरण भी रखता हैं।

पुनैया इस देशमे स्त्री पुरुष संबंधोमें कानुनन समानता चाहता हैं। स्त्री पुरुष के बीच में समान "मैथुन अधिकार" होना चाहिए, यह उसका मत हैं।

इस प्रकार यशपालके स्त्री पुरुष संबंधो के जो भी आधुनिक विचार हैं सभी पूनैया के माध्यम से उपन्यास मे फैलाये गये हैं।

११ : <u>मेरी तेरी और उसकी बात १९७४</u>

१ : उषा :

उषा उपन्यास की नायिका हैं। एक मध्यमवर्गीय परिवार में

में जो मुल रूप मे ब्राम्हण था लेकिन बादमें ईसाई बन गया था - उषा का जन्म हुआ था। उसके पिताजी अध्यापक थे। ईसाई धर्म में कनवर्टेड हिन्दू परिवार मे जिस प्रकार अपने मूल धर्म के अनुसार धार्मिक संस्कार चलते हैं उसी प्रकार उषा के घर में भी संस्कार चलते, ब्राम्हण के ही चलते थे। ब्राम्हण वर्ग का ईसाई होना लेखक की मौलिक कल्पना का उदाहरण हैं।

उषा एम· ए· पढी हैं। पी·एच·डी· कर रही हैं। वह उच्च शिक्षा विभूषित होने के कारण स्वतंत्र विचारोंवाली हैं, उसे चर्च जाना प्रार्थना करना जैसे आडम्बर पूर्ण व्यवहार से धर्म के उच्च मानवीय विचारो के प्रति गहरी आस्था है। सयानी होने पर माता पिता उसके व्यक्तिमत्व को उसके मन के अनुसार विकसित होने का पूरा मौका देते हैं।

जब वह बी· ए· पढ रही थी तब किसी दुर्घटना में जख्मी होनेपर उसका परिचय डॉ· अमर सेठ से होता हैं। संयोग से अपने मास्टरजी की यह लडकी हैं ऐसा मालूम होनेपर अमर का मास्टरजीके घर आना जाना बढ जाता हैं। यही परिचय धीरे धीरे प्रेम में परिणत हो जाता हैं। अमर से मलजोल बढानेपर उषा के घरवाले आपत्ती करते हैं, तब वह घर छोडकर स्वतंत्र जीवन जीना प्रारंभ करती हैं। अमर के साथ विवाह होनेपर भी वह अमर की गिरफ्तारी के दिनों में बडे धीरज के साथ दिन बिताती हैं। वह अकेली रहती हैं लेकिन अपने घर जाना पसन्द नही करती।

विवाहिता स्त्री को परपुरुष के साथ दोस्ती प्यार मुहब्बत नहीं करनी चाहिए इस बातपर वह कभी विश्वास नही करती। अमर के पीछे उसके मित्र नरेन्द्र कोहली के साथ वह खुलकर प्रेम करती रहती हैं। हमेशा अपले विचारोपर दृढ रहती हैं। अमर जब उसके इस व्यवहार का निषेध करता हैं बत वह भी उसकी संकीर्ण मनोकृती का निषेध करती हैं और नरेन्द्र का स्वीकार करती हैं वह हमेशा आत्मसंमान की रक्षा करती रहती हैं।

राजनीति उषा की रुचि का विषय रहा हैं। सन बयालीस के आंदोलन में वह छात्र नेता बनकर अनके सामने प्रभावी भाषण देती हैं तथा आदोलन का क्रियाशिल नेतृत्व भी करती हैं। अंग्रेजों के विरोध मे प्रक्षोभक वक्तव्य करके वह भूमिगत क्रांतिका मार्ग भी अपनाती हैं। उषा लखनउँ से बम्बई जाकर वेश बदलती तथा नाम बदलती हुअी अत्यंत चतुराई से क्रांतीकार्य मे लगी रहती हैं। क्रांतीकार्य का उसका अदम्य साहस चतुरता तथा परिश्रम देखकर यशपाल की धर्मपत्नी श्रीमती प्रकाशवतीजी के क्रांतीकार्य की याद आती हैं।

उषा प्रगतिशील नारी होने के कारण किसी नीति संघर्ष में पडकर अपने मन को मारती नही बैठती। भूमिगत अवस्था में वह अपने पति से दूर रहती हैं, लेकिन अपने सहयोगी मित्र पाठक की ओर आकर्षित होकर उसके साथ शरीर संबंध भी प्रस्थापित करती हैं। वह उसके साथ विवाह करनेका निश्चय भी करती हैं, लेकिन अपने पुत्र के भविष्य के लिए यह विचार वह छोड देती हैं। यहांपर उसका भारतीय स्त्रीत्व फिर उभर आता है और भावुकता की जय होती दीख पडती हैं।

इस प्रकार उषा का व्यक्तित्व परंपरा का विरोध करनेवाला और संघर्षशील हैं। उषा समस्त स्त्रियोंको बंधनोंसे मुक्त होने का संदेश देनेवाली एक विप्लवकारी लपट हैं। धर्म की दकियानुसी मान्यताओं को छोडकर उसमे [उषा] शुध्द मानवीय स्तर का राष्ट्रीय नारी व्यक्तित्व है।

यशपाल के उपन्यासों की अंतिम कडी "मेरी तेरी और उसकी बात" की यह अंतिम नायिका यशपाल के पूर्ववर्ती स्त्री पात्रोंकी तरह अपने ही चिन्तन में खोकर समाप्त नहीं हुअी है, बल्कि वह अपने जीवन को मोड देकर एक नया जीवन अपनाने में किसी भी प्रकार की हिचक महसूस नही करती।

२ : अमर

अमर लखनऊ के लखपति सेठ रामलाल का इकलौता बेटा हैं। बचपन से ही माता विहीन होने के कारण गंगा बुआ ने अत्यंत लाड प्यार से पाला था। परिवार के रूढीवादी संस्कार उसपर बचपन से ही दीख। पडते हैं । वह विनयशील और मर्यादा प्रेमी हैं। उषा के पिता उसके बचपन के मास्टरजी थे। उनके प्रति उसका नतशीश होना उसकी विनम्र वृत्ति का उदाहरण हैं।

अपनी विद्यार्थी जीवन में देश में घटी लाला लाजपतरायजी की हत्या उसे राजनीति की ओर आकर्षित करती हैं। वह कांग्रेसी नीति का अनुगामी हैं। डॉ॰ लोहिया, आ॰ नरेन्द्र देव आदि नेताओं के प्रति उसे विशेष आस्था हैं।

उसके जीवन के अपने कुछ आदर्श हैं। उसके जमाने में १५-१६ वर्ष की उमर में ही विवाह होता था। ऐसे विवाह का वह विरोध करके अपनी प्रगतिशीलता का परिचय देता हैं। पत्नी की कल्पना वह विचारों और कर्मक्षेत्र की अभिन्न संगिनी के रूप में करता हैं। उसकी कल्पना नुसार ऐसी संगिनी का शिक्षित सुंदर सुघड, उदार विचार साहसी कर्मठ होना आवश्यक है था " [१]

अपने लिए घरवालों ने लडकी पसन्द करना और होली में बंद लडकी के साथ आँखे मूंदकर विवाह करना उसे पसन्द नहीं हैं। प्रथम युवक युवती का मिलना, फिर प्रेम आकर्षण, एक दूसरे को अभिन्न साथी के रूप में स्वीकारने के बाद विवाह करना चाहिए यह उसका प्रगतिशील मत था। अपने विवाह के समय वह घरवालों के विरोधों को न मानता हुआ ईसाई धर्म की उषा पंडित के साथ विवाह करके अपने स्वतंत्र, प्रगतिशील विचारों का प्रत्यक्ष उदाहरण हमारे सम्मुख रखता हैं। अपनी विधवा बहन गौरी को पढा लिखाकर

१॰ तेरी मेरी और उसकी बात : यशपाल : पृष्ठ १०६

स्वतंत्र नारी बनाना और उसका पुर्नविवाह करना यही उसकी प्रारंभिक मनश ा स्त्री के प्रति उसके उदार मत का परिचय देती हैं।

वह पेशे से डा क्टर हैं। अपने व्यवसाय के जरिए जितनी हो सके उतनी गरीबो की सेवा करनेका वह प्रयत्न करता रहता हैं। वह गरीब पेशटस का इलाज मुफ्त में करता हैं। उसका चरित्र शुध्द निष्य सनी मनरंजन का तीव्र विरोधी और राष्ट्रीय भक्ति से भरापूरा दीख पडता हैं।

डॉ॰ अमर के व्यक्ति त्व की दूसरी बाजू अत्यंत दुर्बल सी दीख पडती हैं। दुपन्यास प्रथम भाग का विश ुध्द समाजवादी युवक धीरे धीरे अपने साम्यवादी बवचारो से दूर होता हुआ सा नजर आता हैं। अपनी बहन गौरी के स्वतंत्र व्यक्तित्व को चाहनेवाला यह प्रगतिशील युवक जब गौरी के पुर्नविवाह का समय आता हैं तब रूढिवादिता का शिकार ब न उसका विरोध करता हैं। अपनी पत्नी उषा के चारित्र्यपर संदेह करना उसकी मानसिक दुब लता की निशानी हैं। पत्नी के प्रति अपने परंपरागत एकाधिकार का समर्थन करनेवाला डॉ॰ अमर अपने सिध्दान्तोंका दिवाला निकलवा लेने के कारण अकेला रह जाता हैं। प्रगतिशीलता को चाहनेवाला परंतु परंपरा के बंधनो को तोडनेकी हिम्मत न होनेवाला वह ए क दुर्बल पात्र बनकर रह जाता हैं।

डॉ॰ अमर का व्यक्ति इस प्रकार अत्यंत अस्थिर हैं। एक ओर वह भौतिकवादी और मार्क्स वादी है तो दूसरी ओर जड परंपरावादी। विचारो से प्रगतिशील परंतु कांग्रेस के आंदोलन मे क्रियाशील। कई आलोचक उसे झूठा सच का जयदेव पुरी मानते हैं, परंतु जयदेव अपने स्वार्थ के लिए पतित हो गया हैं और डॉ॰ अमर अपने मनके आदर्श और यथार्थ के संघर्ष के कारण पथभ्रान्त हुआ हैं। इसलिए अपने विचारो से अध:पतित होकर भी अमर पाठकों से आदर ही पाता हैं।

निष्कर्ष

"दादा कामरेड" से "मेरी तेरी और उसकी बात" तक कुल ग्यारह उपन्यासों मे बिखरे हुअे ये पात्र नितान्त आधुनिक प्रवृ-ति के प्रतिक हैं, जो समाजकी विषम मान्यताओं का विरोध करेके नये जीवन के आदर्श पाठकों के सामने रखते हैं । ये पात्र विशुध्द समाजवादी प्रवृ-त के पात्र हैं।

पुरुष पात्रो में दादा, हरीश, रॉबर्ट, खन्ना, प्राणनाथ, लॉरेन्स, फैन्टम, भूषण, शिवनाथ आदि पात्र परंपरागत सामाजिक मान्यताओं का विरोध करते हैं। लॉरेन्स, हरीश, खन्ना जैसे पात्र तो मार्क्सवाद के प्रचारक बनकर ही सामने आते हैं

भावरिया, जयदेव और धनसिंह ये पुरुष पात्र उभय पक्षी होने के कारण विशेष प्रभावशाली नही हैं। इन में भावरिया अत्यंत गतिशील पात्र बन गया हैं। "झूठा सच" का जयदेव भी देश विभाजन के पहले एक सक्रिय साम्यवादी था परंतु विभाजन के बाद परिस्थितीयों के कारण ही पूंजीवाद के आश्रयदाता कांग्रेस का अनुगामी बन जाता हैं।

मनुष्य के रूप का धनसिंह ऐसा ही प्रवाह पतित बना पात्र हैं।

समूचे पुरुष पात्रो में यदि सब से अधिक गतिमान चरित्रवाला पात्र कोई है तो "दादा कामरेड" का "दादा"। अपनी सशस्त्र क्रान्तिकारी धारणा को बदलकर हरीश की साम्यवादी विचारधारा -की मदद करनेवाला "दादा" निश्चय ही सजीव एवं असाधारण पात्र बन गया हैं।

प्रगतिशील विचारों की प्रतीक यशपाल की नारियाँ आदि से अंततक क्रियाशील रही हैं। शैल, राजदुलारी, दिव्या, गीता, सोमा, मनोरमा, हिता, कनक, तारा, विनी, मेनका, शकुन्तला, मोती, उषा आदि स्त्री पात्र केवल परिस्थितियोंका सामना ही नहीं करते बल्कि परिस्थितियों को प्रभावित भी करते हैं। आत्म निर्भरता

उनके व्यक्तित्व का महान गुण हैं। समाज को चुनौती देती हुई ये नारियाँ अपने मार्गपर दृढ रहती हैं। इस दृष्टि से शैल, तारा, गीता दिव्या, राज, कनक, मेनका, उषा अत्यंत प्रभावी नारियाँ हैं। वे पुरुषो की दासता को ठुकराकर अपना साथी स्वयं चुन लेती हैं।

राज, उषा, शैल, गीता, कनक ये नारियाँ खुलकर राजनीति में हिस्सा लेती हैं।

यशपाल के समूचे स्त्री पात्रो में सब से अधिक गतिशील पात्र यदि कोई हैं तो उनके अंतिम उपन्यास "मेरी तेरी और उसकी बात" की "उषा"। "उषा" केवल सामाजिक मान्यताओं का विरोध नही करती बल्कि पूर्णतया आत्मनिर्भर होकर नया जीवन प्रारंभ करती हैं।

मनुष्य के रूप की "सोमा" गतिमान लगती हैं परंतु सोमा से पहाडन तक का सोमा विकसित होनेवाला सोमा का चरित्र सोमा को यथार्थ से दूर पहुँचाता हुआ लगता हैं। पाठकों को सोमा का यह बदला रूप देखकर विश्वास भी नहीं होता है। उसके चरित्र में कल्पना का ही अधिक रंग भरा हुआ सा लगता हैं। यहाँपर सोमा वर्ग गत पात्र नहीं लगती।

निष्कर्ष रूप ये कहा जाए तो यशपाल के सभी पुरुष और स्त्री पात्र अत्यंत सफल, सजीव, वर्गगत तथा यशपाल के साम्यवादी विचारों के वाहक लगते हैं।

पुरुष पात्रों की अपेक्षा स्त्री पात्र विशेष प्रभावी और गत्यात्मक लगते हैं।

xxxxxx